ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

जनवरी-२०२४

जनवरी-२०२४ ◆ वर्ष १२ ◆ अंक ०१ ◆ उदयपुर

जितनी भी क्षमता हो, औरों के काम आए,
लघु प्रयास भी अपना, साधन किसी का बन जाए।
ऐसी भावना सब में, सत्यार्थप्रकाश भर जाए।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१५ १४७

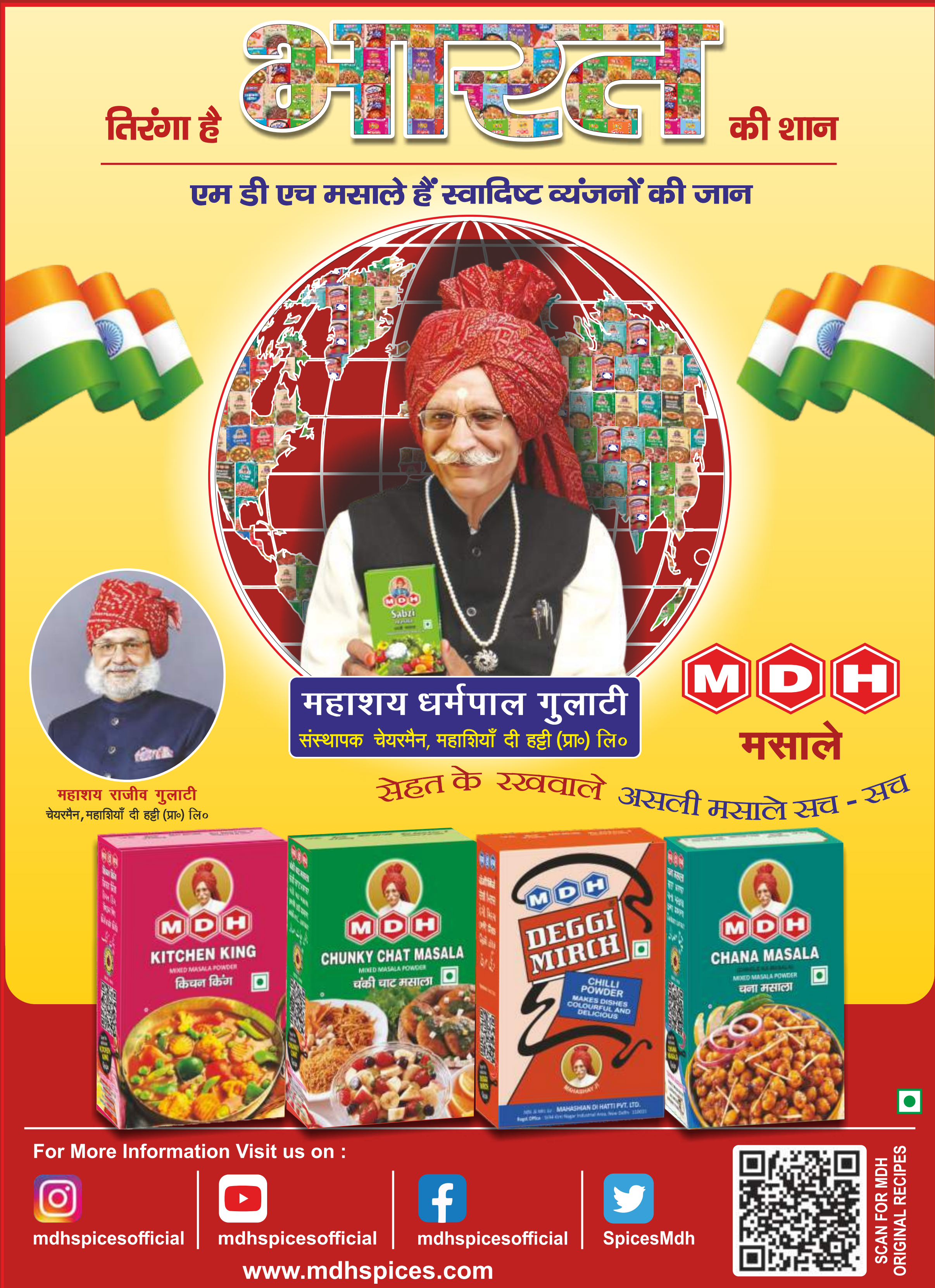
तिरंगा है भारत की शान
एम डी एच मसाले हैं स्वादिष्ट व्यंजनों की जान
महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
MDH
मसाले
महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
सेहत के रखवाले असली मसाले सच - सच
KITCHEN KING
किचन किंग
CHUNKY CHAT MASALA
चंकी चाट मसाला
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
MAKES DISHES COLOURFUL AND DELICIOUS
CHANA MASALA
चना मसाला
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय

डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1250
आजीवन	- 1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	- 600 रु.	$ 125
वार्षिक	- 150 रु.	$ 30
एक प्रति	- 15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२४
पौष कृष्ण एकादशी
विक्रम संवत्
२०८०
दयानन्दाब्द
१९९

January - 2024

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

समाचार २९

हलचल ३०

०४	वेद सुधा
०६	सत्यार्थ मित्र बनें
०६	एनएमसीसी प्रसिद्धि की ओर
१३	मृत्योर्माऽमृतं गमय
१६	महर्षि दयानन्द के दो सौ उपकार
१८	दूसरों की सेवा से खुद को लाभ
२०	कल्याण में 'न' कहने की भूमिका
२४	वेदों में अयोध्या स्थान वाचक नहीं है
२६	तिल के गुण धर्म एवं आत्यिक प्रयोग
२८	कथा सरित- कहानी दयानन्द की

स्वामी: श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १२ अंक -०९

मुद्रण: द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001

(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159

www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

त्याग से मुक्ति

यद्देवा देवान्हविषायजन्तामर्त्यान्मनसामर्त्येन।
मदेम तत्र परमे व्योमन्पश्येम तदुदितौ सूर्यस्य।। - अथर्व. ७/५/३

देवाः– देव, ज्ञानीजन, **मर्त्येन मनसा हविषा**– मरणधर्मा मनरूपी हवि से, **अमर्त्यान्**– अविनाशी, **देवान्**– देवों का, **यत् अयजन्त**– जो यज्ञ करते हैं, **तत्र परमे व्योमन्**– उस परम व्योम में, **मदेम**– हम आनन्दित होवें। **सूर्यस्य उदितौ**– सूर्य के उदय में, **तत् पश्येम**– उसको हम देखें।

व्याख्या

'यज्ञ' शब्द 'यज्' धातु से बनता है। यज् धातु के अर्थ पाणिनि महर्षि के बनाये धातु पाठ में देवपूजा, संगतीकरण और दान- ये तीन लिखे हैं।

देवपूजा का अर्थ है– देवों की पूजा, सत्कार। अन्न, वस्त्र, स्थान, आसन, नमस्कार, यथायोग्य उपयोग आदि विविध प्रकार की सेवा-शुश्रूषा से पूजा हो सकती है।

संगतीकरण का भाव है– संगति करना, मिलना-मिलाना, पदार्थों की एक गति, एक अवस्था, एकरूप करना।

दान का अर्थ– दे डालना, अपना अधिकार छोड़कर दूसरे का अधिकार करा देना।

अब इन तीनों अर्थों पर ध्यान दीजिए, तीनों का मूलभाव एक है- त्याग, छोड़ना। जब देवपूजा करनी होती है, विद्वान् महात्मा का अन्न, जल, वस्त्र आदि से सत्कार करना होता है, उस विद्वान् देव के लिए निर्मित अन्न-वस्त्रादि पर से अपना अधिकार हटाकर उसका अधिकार कर देना होता है। जब संगतीकरण होता है, दो या अधिक द्रव्य मिलते हैं, तो कुछ-न-कुछ रूपान्तर अवश्य होता है। ओषजन तथा आर्द्रजन के संगतीकरण से जल-स्थूल जल-आविर्भूत होता है, दोनों ने अपने बाह्य रूपों का त्याग किया है। इसी प्रकार एक से अधिक व्यक्ति मिलकर जब समाज का संगठन करते हैं, तब उन्हें भी कुछ-न-कुछ त्यागना पड़ता है और कुछ न हो, तो समय तो देना ही पड़ता है। समाजशास्त्र-विशारदों ने इसी तत्त्व को सम्मुख रखकर सिद्धान्त बनाया- 'प्रत्येक को सर्वहितकारी कार्यों में परतन्त्र और स्वहितकारी कार्यों में स्वतन्त्र रहना चाहिए।' दान तो है ही स्पष्ट अपना अधिकार छोड़ना।

इस प्रकार यज्ञ शब्द के धात्वर्थ पर विचार करने से स्पष्ट सिद्ध होता है कि यज्ञ का मूल अर्थ, प्रधानभाव त्याग है।

छान्दोग्योपनिषद् में कहा है-

पुरुषो वाव यज्ञः। (३/१६/१) मानव-जीवन यज्ञ है।

अर्थात् मनुष्य जीवन की सफलता, पुरुष का पुरुषत्व यज्ञ में, त्याग में है। इसी कारण वैदिक अग्निहोत्र की प्रत्येक आहुति के पश्चात् 'इदन्न मम' कहना पड़ता है। यह त्याग की भावना का अभ्यास है।

मुक्ति का स्वरूप बताते हुए वेद ने बताया-

यत्रानुकामं चरणम्। - ऋ. ९/११३/९

जहाँ स्वच्छन्दतापूर्वक, अपनी इच्छानुसार विचरण हो।

कोई व्यक्ति जब अपने-आपको परतन्त्र देखता है, दूसरे के शासन में देखता है, तब व्याकुल होकर उससे छूटने का उपाय करता है। उस अवस्था में उसे अपना साधारण कार्यक्रम छोड़ना पड़ता है। यदि वह पूर्ववत् ही चलता रहे, तो

उसके छुटकारे की कोई सम्भावना नहीं हो सकती। इसी भाँति जब कोई देश या जाति परतन्त्रतापाश में फंस जाती है, तब उससे छुटकारा पाने के लिए उस देश के लोग प्राणत्याग करने तक को तैयार हो जाते हैं। इससे दो बातें सिद्ध होती हैं, एक यह कि परतन्त्रता दुःख है, तभी उससे छूटने की इच्छा होती है। धर्मशास्त्रकार मनुजी ने ४/१६० में कहा है-

सर्वं परवशं दुःखम्। सभी प्रकार की पराधीनता दुःख है।

दूसरी बात यह है कि त्याग के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती, छुटकारा नहीं मिल सकता।

अब उस आत्मा की दशा का विचार करो, जो कर्मपाश में बंधा, जन्म-मरण के चक्कर में पड़ा धक्के खा रहा है। वह स्वच्छन्द नहीं है, इस वर्त्तमान दशा में उसको **'अनुकामचरण'** प्राप्त नहीं है। इसकी प्राप्ति के लिए उसे कुछ त्याग करना होगा। इसके लिए स्व और पर, अपने और पराये का विवेक करना होगा, स्वजातीय और पर-जातीय की पहचान करनी होगी। इस स्व-पर-विवेक को शास्त्र में स्वाध्याय कहते हैं। स्वाध्याय का फल योगशास्त्र में लिखा है-

स्वाध्यायादिष्टदेवतासंप्रयोगः। - २/४४

स्वाध्याय का फल अभीष्ट का मेल है।

इस स्व-पर-विवेक से हमें ज्ञात हुआ कि अहं-मम की वासना सबसे बड़ा फन्दा है, जिसमें हम बंधे हैं। इस ज्ञान के होते ही साधक अहंता-ममता-त्याग का अभ्यास करता है। इसका नाम अपरिग्रह है और अपरिग्रह का फल है।

अपरिग्रहस्थैर्ये जन्मकथन्तासम्बोधः। - योग २/३८

अपरिग्रह=ममता के अभाव=अभिमानाभाव का दृढ़ता से जन्म के हेतु का ज्ञान होता है। इससे ज्ञात होता है कि यह मन हमारे बन्धन का, जन्म-मरण के चक्कर का प्रधान कारण है। मन का विलय होने से आत्मा छूट सकता है, अतः मन का त्याग-मन का यज्ञ करना चाहिए, तब मुक्ति मिलेगी। इसी तत्त्व को लेकर वेद ने कहा-

यद् देवा........मनसा मर्त्येन।

ज्ञानी लोग इस मारक मन को मारने का यत्न करते हैं। उनके त्याग का आरम्भ मन के त्याग से होता है। वे इस यज्ञ में मन को हवि बनाते हैं और फिर यम के शब्दों में कह उठते हैं-

'अनित्यैर्द्रव्यैः प्राप्तवानस्मि नित्यम्।' - कठो. १/२/१०

अनित्य द्रव्यों के द्वारा मैंने नित्य को प्राप्त कर लिया है।

कितना उत्तम व्यापार है। अनित्य, विनाशी, क्षणभंगुर पदार्थ देकर नित्य, अविनाशी और शाश्वत पदार्थ मिलता है। इन विनाशी पदार्थों को तो वैसे भी चले जाना था, किन्तु अब कितनी अच्छी बात हो गई कि विनाशी पदार्थ यों ही नहीं चले गये। हमने सोच, विचार कर उनका समर्पण किया और हमें अविनाशी पदार्थ मिल गया, तभी तो हम आनन्द में विभोर हो रहे हैं और कह रहे हैं-

मदेम तत्र परमे व्योमन्।

उस परम व्यापक, जीवनाधार भगवान् में आनन्द मनाएँ, और हम उसे लुक-छिपकर नहीं देखें, वरन्-

पश्येम तदुदितौ सूर्यस्य।

उसे सूर्य के उदय में, प्रचण्ड प्रकाश में देखें।

अर्थात् हम सदा उसके दर्शन करते रहें। भगवद्दर्शन, ज्ञानालोक में प्रभु संगति ही भक्ति है। उसका मेल होने से सब बन्धन कट जाते हैं। जैसाकि उपनिषद् में कहा है-

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे।। - मुण्डको. २/२/८

उस सर्वोत्कृष्ट भगवान् के दर्शन होने पर हृदय की गांठ खुल जाती है, सब संशय छिन्न-भिन्न हो जाते हैं, कर्म शिथिल पड़ जाते हैं।

यही मुक्ति की दशा है और यह यज्ञ=त्याग से प्राप्त होती है।

संकलन कर्त्ता एवं भाष्यकार- वे. शा. श्री स्वामी वेदानन्दतीर्थ सरस्वती
सम्पादक- स्वामी जगदीश्वरानन्द सास्वती, साभार- स्वाध्याय-सन्दीप

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

NMCC बनता जा रहा पर्यटकों का पसन्दीदा स्थल

गत दिनों हमें एक पारिवारिक विवाह समारोह में सपत्नीक मुम्बई जाना पड़ा। जब बान्द्रा पर उतरने का समय आया तो एक महाराष्ट्रियन दम्पति से यूँ ही बात हुई। उन्होंने कहा कि उदयपुर घूमने गए थे वहाँ से लौट रहे हैं। स्वाभाविक बात थी कि हमारे मन में यह कौतूहल उत्पन्न हुआ कि उदयपुर अगर यह लोग घूमने गए तो क्या नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र भी गए अथवा नहीं? हमने उनसे पूछा कि आप उदयपुर में कहाँ-कहाँ गए तो उन्होंने उदयपुर के कई पर्यटन स्थलों के नाम बताते हुए गुलाबबाग और ट्रेन का जिक्र भी किया और फिर कहा कि 'वहाँ पर एक सांस्कृतिक केन्द्र था जहाँ हम गए। वस्तुत हमारा रिजर्वेशन RAC में था तो मन में बहुत तनाव था। इस मानसिक अवस्था में हम सांस्कृतिक केन्द्र गए तो वहाँ रिसेप्शन पर जो महिला थीं उन्होंने अन्दर जाने का निवेदन किया, हमने कहा हमारे पास केवल १० मिनट हैं तो उन्होंने कहा १० मिनट में भी आप पर्याप्त देख पाएँगे, आप जाइए तो सही। हम मरे मन से अन्दर गए परन्तु वहाँ जो कुछ भी हमने देखा उसमें ऐसे खो गए कि ४० मिनट कब बीत गए हमें पता ही नहीं चला।' तब हमने उन्हें अपना परिचय दिया, तो वह बोले आर्य समाज ने यह एक अत्यन्त सुन्दर कार्य किया है। इससे भारतीय संस्कृति साक्षात् रूप में आगन्तुकों के समक्ष प्रस्तुत हो जाती है। भूले-बिसरे हुए पृष्ठ हमें स्मरण हो जाते हैं। इसके अलावा उन्होंने और भी बहुत तारीफ की। इतने में ही स्टेशन आ गया हम दोनों को ही उतरना था, हम अपने-अपने रास्ते चले गए। जाते-जाते मैंने उनका कार्ड लिया। उनका परिचय- नाम सुनील चिवटे, विकास अधिकारी भारतीय जीवन बीमा निगम, बारामती पुणे था।

सच में यह जानकर कि भिन्न-भिन्न जगह से, देश के कोने-कोने से लोग आ रहे हैं और NMCC को देखकर के सकारात्मक भाव लेकर जा रहे हैं, बहुत अच्छा लगा। क्या ही अच्छा हो कि सम्पूर्ण आर्य जगत् अपने इस प्रथम केन्द्र को प्रचारित-प्रसारित करने में लग जाए तो वह दिन दूर नहीं जब दर्शकों की संख्या हजारों से (अब तक १० माह में दर्शकों की संख्या लगभग ४०००० है) लाखों में पहुँच जाएगी। हम आशा करते हैं कि आप सभी भाई-बहन इसमें सहयोग प्रदान करेंगे।

- अशोक आर्य; अध्यक्ष-न्यास

आपने प्रायः देखा होगा कि अपनी बात को सत्य प्रमाणित करने के लिए लोग उसके साथ ऐसे वाक्य जैसे- अरे! मैंने स्वयं अपनी आँखों से देखा है 'अथवा' मैंने अपने कानों से सुना है, लगा देते हैं अर्थात् जो अपनी आँखों से देखा जाता है अथवा कानों से सुना जाता है वह सत्य होता है।

परन्तु क्या हो अगर यह प्रमाणित हो जाय कि आँखों से आपने गलत देखा। अथवा कानों से आपने गलत सुना। आपने जिस रामप्रसाद को पुल के किनारे देखा वह रामप्रसाद था ही नहीं, और जब वह शिव कुमार को कह रहा था कि फलां-फलां ने मेरी जिन्दगी नरक बना दी है अतः अब तो जीवन का मोह ही नहीं रहा, और क्या हो जब पता चले कि जिस आवाज को आप १०० प्रतिशत रामप्रसाद की मानते हैं क्योंकि आप भली-भाँति जानते हैं, वह रामप्रसाद की थी ही नहीं और न ही जिसे वह कह रहा था वह शिव कुमार था तो फिर आगे से यह कहना खतरे से खाली नहीं होगा कि यह घटना मेरी आँखों देखी और कानों सुनी है। आप सोच रहे होंगे कि यह हम क्या ऊल जलूल बात कर रहे हैं ऐसा कैसे सम्भव है? जी हाँ! यह सम्भव है अत्याधुनिक तकनीक से। आपको संभवतः जानकारी हो कि एक वीडियो में बराक ओबामा ट्रम्प के लिए अत्यन्त अभद्र टिप्पणी कर रहे थे, और इसी प्रकार मार्क जुकरबर्ग दावा कर रहे थे कि दुनिया के अरबों लोगों का डाटा उनके पास है। यह दोनों ही वीडियो कृत्रिम थे जिन्हें तकनीक की दुनिया में तेजी से कदम जमा रही AI अर्थात् Artificial Intelligence के सहारे बनाया गया था। सोचिये इस प्रकार की शरारत किसी के लिए भी जीवन-मरण का प्रश्न बन सकती है, उसकी प्रतिष्ठा को तार-तार कर सकती है, उसे अपराधी तक भी साबित कर सकती है।

कहते हैं कि उच्च तकनीक अपने साथ उतना ही खतरा भी लेकर आती है। दक्षिण कोरिया में अभी AI कम्प्यूटर प्रोग्राम के सहारे काम करने वाले एक रोबोट ने इंसान को डिब्बा समझ लिया और फैंक दिया। दुर्घटना के समय कर्मचारी रोबोट के सेंसर ऑपरेशन का निरीक्षण कर रहा था तभी किसी तकनीकी खराबी के चलते रोबोट ने उसे सब्जियों का डिब्बा समझकर फैंक दिया। अस्पताल ले जाने तक उसकी मृत्यु हो गयी। ये तो हजारों प्रत्यक्ष उदाहरणों में से एक है। प्रश्न उठता है कि फिर इसे हम उपयोग में क्यों ला रहे हैं? उत्तर है इस तकनीक के चमत्कारिक लाभ।

AI को हमारे द्वारा दिया गया टास्क-

१. Artificial intelligence के लाभ के लिए हमने भी एक प्रयोग किया। हमने उसे महर्षि दयानन्द के ऊपर एक कविता लिखने को कहा। एक मिनट से भी कम समय में उसने जो लिखा वह चमत्कार जैसा ही है। देखिये उसका उत्तर- 'महर्षि दयानन्द के जीवन पर कविता लिखने के लिए मुझे बहुत खुशी हो रही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती एक महान् धार्मिक और सामाजिक सुधारक थे, जिन्होंने आर्य समाज की स्थापना की और वेदों के प्रचार-प्रसार का काम किया। उनका जन्म १२ फरवरी १८२४ को गुजरात के टंकारा गाँव में हुआ था। उन्होंने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में भारत के विभिन्न हिस्सों में घूमकर लोगों को वेदों का ज्ञान दिया और अंधविश्वास, जातिवाद, बाल-विवाह, सती-प्रथा जैसी कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई। उनका निधन ३० अक्टूबर १८८३ को पंजाब के लुधियाना में हुआ था। (निधन के स्थान की जानकारी गलत थी)

महर्षि दयानन्द के जीवन पर मेरी (अर्थात् AI की) कविता इस प्रकार है-

'महर्षि दयानन्द, एक नाम, एक आदर्श, सत्यार्थ प्रकाश का सन्देश, उनका विशेष।
स्वतंत्रता की ज्योति जलाई, वेदों की गहराई को समझाई।
आर्य समाज की स्थापना की, धर्म और विज्ञान की एकता दी।
सत्य की राह दिखाई, अंधविश्वास को मिटाई।
उनके विचार अमर रहेंगे, हमेशा हमारे दिल में बसे रहेंगे।
महर्षि दयानन्द, एक नाम, एक आदर्श, सत्यार्थ प्रकाश का सन्देश, उनका विशेष।

मुझे उम्मीद है कि आपको मेरी कविता पसन्द आई होगी। अगर आप इसमें कोई सुधार करना चाहते हैं, तो मुझे बताएँ। मैं आपकी मदद करने के लिए तैयार हूँ।'

२. अब हमने नवलखा महल उदयपुर के बारे में कुछ लिखने को कहा। देखिये उत्तर-

नवलखा महल, उदयपुर, राजस्थान में स्थित है। १. यह महल गुलाबबाग (रोज गार्डन) के अन्दर स्थित है।
२. यह महल महाराणा सज्जन सिंह का राज्य अतिथि गृह था। ३. महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसी स्थल पर "सत्यार्थ प्रकाश" लिखा था। ४. उन्होंने महाराणा सज्जन सिंह के निमंत्रण पर यहाँ आकर अधिक से अधिक समय बिताया था। ५. २०२३ में, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की २००वीं जन्मजयन्ती के अवसर पर, नवलखा महल को सार्वजनिक रूप से खोल दिया गया। ६. इस महल को एक संग्रहालय-सह-प्रेरणा केन्द्र में परिवर्तित किया गया है, जिसे बहुत ही सुन्दरता से डिजाइन किया गया है। ७. नवीनीकरण के दौरान, कुछ नए परियोजनाओं जैसे कि एक मिनी थिएटर, एक सांस्कृतिक गैलरी और एक प्रेरणा एन्क्लोजर को पूरा किया गया। ८. पूरे बाहरी फासाद को सुन्दरता से तराशा गया है और महर्षि अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा की जीवन्त सादृश्य वाली मूर्तियाँ नवलखा महल कॉम्प्लेक्स, उदयपुर में प्रदर्शित की गई हैं।

३. अब हमने महर्षि दयानन्द पर एक लेख लिखने को कहा- उत्तर देखिये

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की, जिसका उद्देश्य वैदिक ज्ञान के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाना था। उनके विचार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की भावना के साथ गूँजते थे। उन्होंने वेदों के अध्ययन को बढ़ावा दिया और लोगों को अर्थहीन रीति-रिवाजों से दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने सभी के लिए समान अधिकारों की बात की,

हिलाओं और अव्यवसायी वर्ग के सामाजिक उत्थान की जरूरत पर जोर दिया। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८५७ की पहली स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाई। उनकी राष्ट्रवादी विचारधारा ने भारतीय राष्ट्रवाद को और अधिक व्यापक बनाया और इसे भारत की सामान्य जनता के करीब लाया। उनके दो नारे 'वापस वेदों की ओर लौटो' और 'भारत भारतीयों के लिए' ने स्वामी दयानन्द को यह इच्छा जताई कि भारत का धर्म और साम्राज्य भारतीयों का होना चाहिए। उनकी विचारधारा ने अनगिनत लोगों को स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया, जिसने देश को स्वतंत्रता की ओर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी राष्ट्रवादी विचारधारा से प्रभावित होकर कई देशभक्त जैसे कि रामप्रसाद बिस्मिल और भगत सिंह ने आर्य समाज में शामिल होकर देश की स्वतंत्रता के लिए काम किया।

इसको देखकर हमें लगता है कि अभी भी जो उत्तर हैं वे श्रेष्ठ हैं और आगे सुधार होने पर अथवा इसका पेड

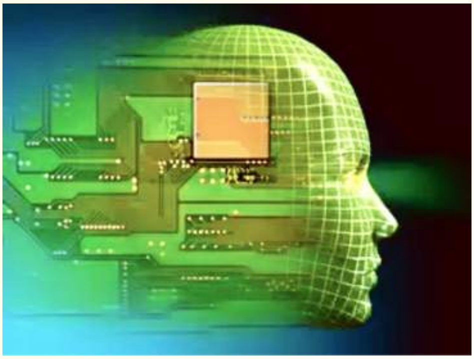

वर्जन लेने पर और शानदार परिणाम दिख सकते हैं। क्योंकि इसके भी कई स्तर हैं। एक लेख के अनुसार AI एक कम्प्यूटर प्रोग्राम को स्वयं सोचने और सीखने की क्षमता प्रदान करता है। यह उन कार्यों को करने के लिए मशीनों में मानव बुद्धि (इसलिए, कृत्रिम) का अनुकरण है जिन पर हम आमतौर पर मनुष्यों पर भरोसा करते हैं। अपनी क्षमताओं के आधार पर AI के तीन मुख्य प्रकार हैं - कमजोर AI, मजबूत AI और सुपर AI।

कमजोर एआई– एक कार्य पर ध्यान केन्द्रित करता है और अपनी सीमाओं से परे प्रदर्शन नहीं कर पाता (हमारे दैनिक जीवन में आम)

मजबूत एआई– किसी भी बौद्धिक कार्य को समझ और सीख सकता है जो एक इंसान कर सकता है (शोधकर्त्ता मजबूत एआई तक पहुँचने का प्रयास कर रहे हैं)

सुपर एआई– मानव बुद्धि को पार करता है और किसी भी कार्य को मानव से बेहतर कर सकता है (अभी भी एक अवधारणा)

अब बताइए लेखक और कवियों की आवश्यकता कितनी रह जायेगी? इसका एक नकारात्मक पक्ष भी है- क्या यह मानव जीवन के लिए उसी प्रकार खतरनाक नहीं है जैसे मनुष्य की गणना करने की क्षमता का हरण केलकुलेटर ने कर लिया है उसी प्रकार उसकी विचार क्षमता, रचनात्मकता, लालित्य भावों व काव्य व साहित्य की सृजनात्मकता का भी हरण कर लिया जावेगा, क्या यह डर आसन्न नहीं है?

अतएव सत्य यह है कि जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कई फायदे हैं, वहीं कुछ कमियाँ/हानियाँ भी हैं। एआई के लाभों में कार्य स्वचालन के माध्यम से दक्षता, सूचित निर्णयों के लिए डेटा विश्लेषण, चिकित्सा निदान में सहायता और स्वायत्त वाहनों की उन्नति शामिल है। एआई की कमियों में नौकरी में विस्थापन, पूर्वाग्रह और गोपनीयता के बारे में नैतिक चिन्ताएँ, हैकिंग से सुरक्षा जोखिम, मानव जैसी रचनात्मकता और सहानुभूति की कमी शामिल है।

नए आविष्कारों का एक और उदाहरण स्व-चालित कारें हैं, जो मानव हस्तक्षेप के बिना सड़कों और यातायात को नेविगेट करने के लिए कैमरे, सेंसर और एआई एल्गोरिदम के संयोजन का उपयोग करती हैं। विभिन्न कम्पनियों द्वारा इन्हें विकसित किया जा रहा है और इनसे परिवहन में क्रान्ति आने की उम्मीद है।

एक उदाहरण एआई-संचालित भर्ती प्रणाली भी है जो जनसांख्यिकी के बजाय कौशल और योग्यता के आधार

पर नौकरी आवेदकों की स्क्रीनिंग करती है। इससे भर्ती प्रक्रिया में पूर्वाग्रह को खत्म करने में मदद मिलती है। क्या मानवीय संवेदनाओं और करुण भावों का यहाँ कोई स्थान होगा? लगता तो नहीं।

लगभग २० साल पहले, जब आप किसी यात्रा की योजना बना रहे थे तो आपने किसी ऐसे व्यक्ति से परामर्श लिया होगा जो पहले से ही वहाँ जा चुका था। अब आपको बस AI से पूछना है कि बैंगलोर कहाँ है। आपके और बैंगलोर के बीच का सबसे अच्छा मार्ग, बैंगलोर के स्थान के साथ, Google मानचित्र पर प्रदर्शित किया जाएगा। आपकी घूमने की पूरी itinerary बना दी जायेगी। परन्तु हमें यह सन्देह है कि व्यावसायिक हित रखने वाले कारकों से रहित यह निष्पक्ष और पर्यटक के हित की ही होगी।

वस्तुतः भावनाएँ और नैतिकता महत्वपूर्ण मानवीय विशेषताएँ हैं जिन्हें एआई में शामिल करना मुश्किल हो सकता है। एआई की तीव्र प्रगति ने कई चिन्ताएँ पैदा कर दी हैं कि एक दिन, एआई अनियंत्रित रूप से बढ़ेगा, और अंततः मानवता को मिटा देगा। इस क्षण को एआई विलक्षणता के रूप में जाना जाता है।

ये सारी वैज्ञानिक उन्नति जिसका एक अत्यन्त संक्षिप्त अंश हमने यहाँ दर्शाया है चमत्कारिक लगने के साथ मानव के जीवन में सुविधाओं का अम्बार लगा देती है। परन्तु हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। इन उपकरणों का लाभ लेते-लेते मनुष्य की तत्सम्बन्धी क्षमता कम होती जाती है। अभी तो हमें बहुत सुख प्रतीत हो रहा है परन्तु एक लम्बे समय के पश्चात् मनुष्य में स्वयं की क्षमताओं में, सामाजिक क्षेत्र में प्रतिकूलताओं से हमारा परिचय अवश्य होने वाला है, इसमें कोई सन्देह नहीं। जैसा हमने ऊपर संकेत किया एक अत्यन्त सरल उदाहरण देखें वह है केलकुलेटर। एक समय था जब हम 13X8 बिना कैलकुलेटर की सहायता से सेकंडों में हल कर लेते थे। क्योंकि तब प्रायः सभी को पहाड़े याद थे। आज हम इससे भी सरल वह भी जोड़ भी करना हो तो तुरन्त कैलकुलेटर निकाल लेते हैं। अगर टेबल पर कैलकुलेटर नहीं है तो मोबाईल में तो उपलब्ध है जो एक क्षण भी हमसे विलग नहीं होता। परिणाम यह हुआ है कि आज हम स्वयं गणना करने लगें तो पर्याप्त समय भी लगता है और परिणाम की शुद्धता पर भी सन्देह रहता है। और अब तो कठिन से कठिन गणना के लिए भी केलकुलेटर उपलब्ध हैं परिणाम यह हो रहा है कि आज के बच्चे के मष्तिष्क गणना के लिए अनभ्यस्त होते जा रहे हैं। यह तो एक उदाहरण है। हम कितनी खतरनाक स्थितियों की ओर बढ़ रहे हैं, कुछ अन्दाज है? मनुष्य कैसे अनभ्यासी हो जाता है इस हेतु मैं अपनी बात करूँ। लेपटॉप पर मैं लिखकर अपने लेख आदि टाइप करता था। अब speech to text का feature आने से बोलता हूँ और टाइप हो जाता है। इसका असर यह हुआ है कि कभी लिखकर टाइप करना पड़े तो बहुत आलस्य आता है।

अभी हमने ऊपर जो AI chat बॉक्स से महर्षि दयानन्द के लेख और कविता का उदाहरण दिया है, धीरे-धीरे लोग उसके अभ्यस्त होते जायेंगे जैसे आजकल घरों में प्रायः हर कार्य अलेक्सा यह करो, वह करो कहकर कराये जाते हैं। उठने का और सिस्टम को चालू करने का कष्ट कौन करे। उसी प्रकार लेख और कविताओं का सृजन यदि होने लगेगा तो मनुष्य की कल्पनाशीलता और रचनात्मकता का क्या होगा? हर लेखक की विशिष्ट शैली होती है जो उसकी पहचान होती है, उसकी धारा प्रवाहता का क्या होगा? नई सामग्री का सृजन क्या बंद नहीं हो जाएगा? यह स्थिति कैसी होगी? आखिर तो कृत्रिम बुद्धि से वही लिखा जा सकता है जो अन्तरजाल

पर उपलब्ध है और भविष्य में यह और उन्नत हो गया तो निश्चित ही मनुष्य की रचनात्मक क्षमता को पूर्ण विराम लग जाएगा। क्या ये सारी तथाकथित उन्नति हमें आलस्य और निरुद्यमता की ओर धकेल नहीं रही हैं? इसके अलावा जो सबसे बड़ी आशंका है वह है आपराधिक कृत्यों में इसके इस्तेमाल का।

अभी से देखने में आ रहा है कि इसका प्रचुर उपयोग आपराधिक कृत्यों में होने लगा है। एक नाम सामने आया है जिसे डीपफेक तकनीक कहते हैं। किसी के चहरे पर किसी अन्य का चेहरा लगा देना वह भी इस प्रकार कि जिसमें लेशमात्र अन्तर भी दृष्टिगोचर न हो। डीपफेक (अंग्रेजी- deepfake, "deep learning" + "fake") से तात्पर्य कृत्रिम मीडिया से होता है, जिसमें एक मौजूदा छवि या वीडियो में एक व्यक्ति की जगह किसी दूसरे को लगा दिया जाए, इतनी समानता से कि उनमें अन्तर करना कठिन हो जाए। हालाँकि फर्जी मीडिया बनाना नया कार्य नहीं है, किन्तु डीपफेक ने मशीन लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी शक्तिशाली तकनीकों का लाभ उठाकर नजर और कान को धोखा देने हेतु दृश्य और ऑडियो सामग्री उत्पन्न करने में काफी बड़ा कदम है।

डीपफेक 'ह्यूमन इमेज सिंथेसिस' नाम की टेक्नोलॉजी पर काम करता है। जैसे हम किसी भी चीज की फोटो-कॉपी कर लेते हैं, वैसे ही ये टेक्नोलॉजी चलते-फिरते और बोलते लोगों की हूबहू कॉपी कर सकती है। मतलब हम स्क्रीन पर एक किसी भी इंसान, जीव को चलते-फिरते, बोलते देख सकते हैं, जो नकली हो या जिसकी कॉपी बनाई गयी हो। इस टेक्नोलॉजी की नींव पर बनी एप्स बेहद नुकसान पहुँचा सकती हैं। इससे किसी एक व्यक्ति के चेहरे पर दूसरे का चेहरा लगाया जा सकता है और वो भी इतनी सफाई और बारीकी से कि स्रोत चेहरे के सभी हाव-भाव तक फर्जी चेहरे पर दिख सकते हैं। इसके खतरे को भली भाँति समझा जा सकता है। वस्तुतः जो सिनेमा की दुनिया के प्रसिद्ध लोग हैं उनके अश्लील वीडियो निर्माण में इस deep Fake तकनीक का सहारा ये अपराधी मानसिकता के लोग लेते हैं। अभी भारतीय अभिनेत्री के वीडियो से इस पर पुनः चिन्ता का वातावरण व्याप्त हो गया है।

भारत सरकार में राज्य मंत्री श्री राजीव चन्द्रशेखर ने इस पर अपनी टिप्पणी की है "Deep fakes are the latest and even more dangerous and damaging form of misinformation and need to be dealt with by platforms".

अभी हम इस विषय पर लिख ही रहे थे कि माननीय प्रधानमंत्री श्री मोदी जी का एक वक्तव्य सुनने को मिला, जिसमें उन्होंने डीपफेक वीडियो के खतरे को भविष्य का बहुत बड़ा खतरा बताया और मीडिया जगत् से आम जनता को इसकी जानकारी और कैसे इसका शिकार होने से अपने को बचा सकें, देने का निवेदन किया उन्होंने स्वयं का एक उदाहरण देते हुए कहा कि एक ऐसा वीडियो सोशल मीडिया पर चल रहा है जिसमें वे स्वयं अर्थात् मोदी जी गरबा गा रहे हैं। इसी प्रकार एक अन्य रिपोर्ट के मुताबिक मध्य प्रदेश के चुनावों के मध्य में केबीसी नाम के एक प्रसिद्ध शो का एक फेक वीडियो चल रहा था। जिसमें प्रश्न इस प्रकार का पूछा गया कि वो कौन सा मुख्यमंत्री है जिसको सबसे ज्यादा झूठ बोलने की आदत है? और सही उत्तर में शिवराज चौहान को दर्शाया गया था। 'कौन बनेगा करोड़पति' को टेलीकास्ट करने वाली कम्पनी सोनी टीवी को सफाई देनी पड़ी जिसमें कहा गया कि ये नकली वीडियो है, होस्ट और कंटेस्टेंट्स की आवाज से छेड़छाड़ की गई है, साइबर क्राइम सेल में शिकायत की गई है। क्या यह सीधे-सीधे चुनावों को प्रभावित करने का प्रयास नहीं है?

तो ये कुछ प्रारम्भिक खतरे दिखाई पड़ रहे हैं। परन्तु सच देखा जाए तो इस तकनीक के माध्यम से एक दुष्ट दिमाग वाला व्यक्ति क्या-क्या नहीं कर सकता है? अराजकता फैला सकता है। चुनावों को प्रभावित कर सकता है। देश के जनतांत्रिक तंत्र को प्रभावित कर सकता है। और ना जाने क्या-क्या।

यह तो केवल एक संकेत मात्र है ऐसे हजारों खतरे आसन्न हैं। वस्तुतः मूल बात यह है कि तकनीक कोई भी हो वह किसके हाथ में है उसका प्रयोगकर्त्ता कौन है, महत्वपूर्ण यह है। जैसे चाकू की प्रयोगकर्त्ता गृहणी है अथवा लुटेरा उस पर परिणाम सब्जी होगी अथवा लाश, यह निर्भर करता है।

तकनीकी विकास का स्वागत होना चाहिए परन्तु उसका प्रयोगकर्त्ता यदि मनुष्य है तो कोई खतरा नहीं। मूल बात सबसे पहले मानव निर्माण की है। जिसे सर्वथा उपेक्षित कर दिया गया है। उसके दुष्परिणाम सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

वेद कहता है- **'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्'**

अर्थात् स्वयं मनुष्य बनो और मनुष्यों का ही निर्माण करो। इसका क्या अर्थ है? केवल मनुष्य की आकृति होने मात्र से व्यक्ति मनुष्य नहीं बन जाता। मनुष्यता के समस्त उदात्त तत्व उसमें होने आवश्यक हैं। यह तब सम्भव है जब प्रथम तो माता-पिता स्वयं को इन उदात्त भावों से पूरित करें फिर अपनी सन्तानों में। उनके जीवन का यही प्राथमिक उद्देश्य है यह समझ कर करें तब जाकर 'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्' का भाव सार्थक होगा। अब जो भी तकनीक निर्मित होगी उसका प्रयोग मानव कल्याण की भावना से ही किया जाएगा। सारे ज्ञान-विज्ञान का केन्द्र बिन्दु आखिर तो मनुष्य है। वह अभ्युदय और निःश्रेयस को प्राप्त कर सके यह समस्त प्रयासों का लक्ष्य होना चाहिए। एक डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक तभी पूर्णरूप से सफल है जब उसके प्रयासों का लक्ष्य मानव-हित हो, अर्थार्जन तो बाद में उपलब्ध हो ही जाता है।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

भर्तृहरि महाराज ने बहुत सुन्दर उपदेश दिया है-
'जब तक यह शरीर स्वस्थ और निरोग है, जब तक बुढ़ापा निकट नहीं आया है, जब तक इन्द्रियों की शक्तिक्षीण नहीं हुई है तथा आयु का क्षय नहीं हुआ है, तब तक ज्ञानी व्यक्ति को आत्मकल्याण के लिए महान् प्रयत्न करते रहना चाहिए। आग लगने पर कुँआ खोदने से क्या लाभ?' (वैराग्यशतक)

मृत्यु, जीवन की प्रेरक है

मृत्यु का प्रत्यक्ष दर्शन ज्ञानी-विद्वज्जन को भी एक बार विचलित अवश्य कर देता है परन्तु मृत्यु उनके अन्तःकरण में प्रेरणा भी देती है उसको जानने और

समझने का अवसर देती है; उसे स्वाभाविक रूप से वैराग्य और प्रभु-भक्ति की ओर प्रेरित करती है। सांसारिक भोगों के प्रति परम वैराग्य की भावना उत्पन्न कर उसे ईश-भक्ति की ओर प्रेरित करती है।
दुर्भाग्य से जब किसी की मृत्यु हो जाती है, तब मन में स्वाभाविक रूप से वैराग्य की भावना उत्पन्न होती है और वह ईश्वर की ओर उन्मुख होता है। परन्तु प्रश्न यह है कि यह वैराग्य की अनुभूति रहती कब तक है? जब तक श्मशान में है। इसलिए इसे क्षणिक वैराग्य का नाम दिया है। शास्त्रकारों ने इसे **'श्मशान वैराग्य'** का नाम दिया है, ऐसी अवस्था में नास्तिक से नास्तिक व्यक्ति भी ईश्वर की चर्चा करने लगता है। आचार्य चाणक्य ने कहा है-
'धर्मोपदेश सुनते हुए, रोगियों की असाध्य पीड़ाओं को देखकर तथा श्मशान में जैसी वैराग्यमयी वृत्ति जागृत होती है, यदि वह सदा के लिए स्थायी हो सके तो इस संसार के बन्धन से कौन नहीं छूट सकता?'
मृत्यु मानव के लिए सर्वाधिक दुःखमय और कष्टप्रद है। ऐसी विपत्ति के समय स्वाभाविक रूप से जो शक्ति उसे अपने सर्वाधिक निकट प्रतीत होती है, वह प्रभु नाम का स्मरण ही है। ईश्वर का सच्चा भक्त जानता है कि सुख प्रभु से दूर ले जानेवाला है और दुःख (मृत्यु दुःख) प्रभु की निकटता देनेवाला है।
मृत्यु दुःख की ये प्रेरणाएँ सामान्य नहीं है। इस स्वाभाविक प्रेरणा से प्रेरित होकर यदि कोई व्यक्ति स्थायी रूप से प्रभु-भक्ति को अपने जीवन में स्थान दे देता है, वह प्रेय से श्रेय मार्ग को अपना लेता है। प्रभु का स्मरण नश्वर शरीर के लिए किये जाने वाले कर्मों से बचने की प्रेरणा और शक्ति प्रदान करता है।
आज कौन है जो मृत्यु से प्रेरणा प्राप्त करना चाहता है? कौन है जिसे मृत्यु-रहस्य या विज्ञान को जानने

की तीव्र जिज्ञासा है? मृत्यु-रहस्य को जानने की तीव्र जिज्ञासा और उत्कण्ठा राजकुमार सिद्धार्थ और बालक मूलशंकर ने की थी। इसी जिज्ञासा और उत्कण्ठा ने ही राजकुमार सिद्धार्थ को महात्मा बुद्ध और बालक मूलशंकर को महर्षि दयानन्द बना दिया। ज्ञानियों के लिए यह प्रेरणा और चिन्तन का आधार है और अज्ञानियों के लिए दुःख का आधार और भय का कारण है।

मृत्युशय्या पर लेटे भीष्म पितामह ने अपने

जीवन-सन्ध्या काल में मोक्षधर्म का उपदेश दिया है। वे युधिष्ठिर को कहते हैं-

अमृतं चैव मृत्युश्च द्वयं देहे प्रतिष्ठितम् ।
मृत्युरापद्यते मोहात् सत्येनापद्यतेऽमृतम् ।।

(महाभारत, **शान्तिपर्व**)

अमरता (मोक्ष) और मृत्यु दोनों इस शरीर में ही प्रतिष्ठित हैं, परन्तु मोह से मृत्यु और सत्य से 'अमृत (मोक्ष) प्राप्त होता है।

कठोपनिषद् में कहा है- संसार में दो प्रकार के मार्ग हैं और उन पर चलने वाले व्यक्ति भी दो प्रकार के हैं। ये मार्ग हैं- प्रेय और श्रेय। प्रेय- यह लौकिक और भोग प्रधान दृष्टिकोण है। अमृत-मार्ग या मृत्युञ्जय-मार्ग की जिज्ञासा इनको नहीं होती।

मृत्यु और जन्म दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं

मृत्यु और जन्म दोनों सापेक्ष शब्द हैं। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। एक का कारण दूसरा रहता है। जन्म के बाद मृत्यु का उपक्रम शुरु हो जाता है और मृत्यु के बाद जन्म का। आत्मा पुराने शरीर को छोड़कर नये शरीर को धारण कर लेता है- यही मृत्यु और जन्म है। बिना मृत्यु के न जन्म सम्भव है और न बिना जन्म के मृत्यु की कल्पना की जा सकती है। दोनों एक-दूसरे के साथ अनिवार्य रूप से जुड़े हुए हैं।

मनुष्य के व्यवहार में यह आश्चर्य देखने में आता है कि वह जन्म के समय प्रसन्न होता है, आनन्द मनाता है और मृत्यु के समय दुःखी होता है। परन्तु विचार कीजिए, यदि किसी स्थान पर किसी की मृत्यु न हुई हो तो दूसरे स्थान पर किसी का जन्म भी नहीं हो सकता। अतः जन्म के आनन्द के साथ मृत्यु के दुःख को भी किसी न किसी को तो स्वीकार करना ही होगा। इसलिए ज्ञानीजन मृत्यु के इस रहस्य को जानकर न जन्म के समय आनन्दित होते हैं और न मृत्यु से कभी दुःखी होते हैं। जन्म-मरण के इस क्रम को ही वेदादि शास्त्रों में जीव का **'बन्धन'** कहा है और जन्म-मरण के बन्धन से छूट जाने को **'मोक्ष'**।

बृहदारण्यक उपनिषद् में महर्षि याज्ञवल्क्य से एक प्रश्न किया गया है-

याज्ञवल्क्येति होवाच-यदिदं सर्वं मृत्युनाऽऽप्तं, सर्वं मृत्युनाभिपन्नं, केन यजमानो मृत्योराप्तिमतिमुच्यत इति ।। (बृहद् - ३/१/३)

हे याज्ञवल्क्य! यह बताओ कि यदि यह समस्त संसार मृत्यु से व्याप्त है-मृत्यु के वश में है, तो वह साधन क्या है कि जिससे यजमान इस मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकता है?

बृहदारण्यक उपनिषद् में ही नहीं कठोपनिषद् में भी बालक नचिकेता ने आचार्य यम से इन्हीं प्रश्नों का समाधान प्राप्त करना चाहा है।

यस्मिन्निदं विचिकित्सन्ति मृत्यो!
यत् साम्पराये महति ब्रूहि नस्तत् । (१/२९)

हे मृत्यु के अधिष्ठाता देव! मृत्यु के पश्चात् परलोकगत जीव के सम्बन्ध में तथा परलोक के विषय में भी लोग नाना प्रकार के सन्देह प्रकट करते हैं, मुझे इन सबका रहस्य स्पष्ट करें।

अज्ञान या अविवेक के कारण ही जीवात्मा जन्म-मरण के बन्धन में पड़ा रहता है। मृत्यु की अनिवार्यता और शरीर की वास्तविकता का अनुभव ही ज्ञानमार्ग की प्रथम सीढ़ी है। महर्षि मनु लिखते हैं-

सम्यग्दर्शनसम्पन्नः कर्मभिर्न निबद्धयते ।
दर्शनेन विहीनस्तु संसारं प्रतिपद्यते।। (मनु. ६/७४)

अर्थात्- यथार्थ दर्शन करनेवाला व्यक्ति दुष्टकर्मों के बन्धन में नहीं पड़ता है। दर्शन से विहीन अर्थात् तत्त्वज्ञान से रहित व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त न होकर जन्म-मरणरूप संसार को प्राप्त होता है अर्थात् सांसारिक बन्धन में पड़ता रहता है।

महर्षि दयानन्द ने स्वरचित ग्रन्थों सत्यार्थ प्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में इस विषय पर विस्तृत प्रकाश डाला है। मुक्ति और बन्ध किन बातों से होता है? इसके उत्तर में वे लिखते हैं- **'परमेश्वर की आज्ञा पालने; अधर्म, अविद्या, कुसंग, कुसंस्कार, बुरे व्यसनों से अलग रहने; और सत्यभाषण, परोपकार, विद्या, पक्षपातरहित न्याय, धर्म की वृद्धि करने; पूर्वोक्त प्रकार से परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अर्थात् योगाभ्यास करने; विद्या पढ़ने-पढ़ाने और धर्म से पुरुषार्थ कर ज्ञान की उन्नति करने; सब से उत्तम साधनों को करने और जो कुछ करे, वह सब पक्षपातरहित न्यायधर्मानुसार ही करे; इत्यादि साधनों से मुक्ति और इनसे विपरीत ईश्वराज्ञाभंग करने आदि काम से बन्ध होता है।'**

(सत्यार्थ प्रकाश; नवम समुल्लास, पृष्ठ- २३६)

लेखिका- (स्मृतिशेष) सत्यार्थदूत श्रीमती सरोज आर्या
साभार- मृत्योर्माऽमृतं गमय

प्रभु कृपा से नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र मतमतान्तरों से सम्बन्ध रखने वाले व्यक्तियों को भी खूब भा रहा है। आपने देखा होगा कि किस तरह से जैन, पौराणिक, यहाँ तक कि मुस्लिम बन्धुओं ने मुक्तकण्ठ से इस प्रकल्प की प्रशंसा की है। संलग्न रिव्यू निखहत शेख जी का है। आपके अवलोकनार्थ

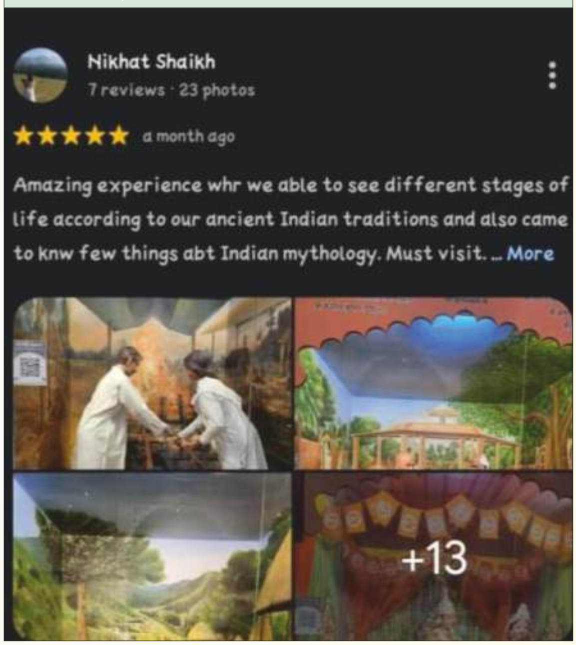

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

आज दीपोत्सव की प्रारम्भिक बेला में मेवाड़ के महाराणा सज्जन सिंह जी द्वारा निर्मित एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा पल्लवित नवलखा महल, गुलाब बाग में स्थित नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र की दीर्घा का अवलोकन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों/गुणों से युवा पीढ़ी को अवगत कराने का एक बहुत ही सकारात्मक प्रयास है। यहाँ के न्यास अध्यक्ष अशोक जी आर्य एवं टीम का आभार, एवं नेक कार्य को आगे बढ़ाने एवं पल्लवित करने हेतु शुभकामनाएँ।

- जतिन कुमार गाँधी, सहायक आयुक्त, देवस्थान उदयपुर

High quality presentation, explaining the cycle of life as well as a short animated video of Maharana Pratap's story. There is also an excellent art gallery.

-Tony Whitefild

महर्षि दयानन्द

की २००वीं जयन्ती पर महर्षि दयानन्द के दो सौ उपकार

गतांक से आगे ......

- क्रान्तिकारियों के प्रेरणा स्रोत रहे।
- महादेव गोविन्द रानाडे आपके शिष्य रहे।
- सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल क्रान्तिकारी बने।
- १८७५ ई. में आर्यसमाज की स्थापना की।
- किसी व्यक्ति विशेष को अपना उत्तराधिकारी नहीं बनाया।
- आर्यसमाज को जनतांत्रिक संगठन बनाया।
- पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी, पंडित लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय जैसे अनेकों सेनानी प्रदान किए।
- आर्य बाहर से नहीं आए यह घोषणा की।
- आर्य का अर्थ श्रेष्ठ बताया।
- भारत में आर्यों को मूल निवासी बताया।
- आर्य और द्रविड़ के भेद को मिटाया।
- आर्य द्वारा बसाया होने से प्राचीन नाम आर्यावर्त्त बताया।
- आर्यसमाज को अपना उत्तराधिकारी बनाया।
- आर्यसमाज जैसा संगठन बनाकर देश में सर्व सुधार की नींव डाली।
- आर्य को जाति वाचक नहीं गुण वाचक शब्द बताया।
- आर्य कोई जाति नहीं अपितु श्रेष्ठ व्यक्तियों का संगठन बताया।
- आर्यसमाज में स्वयं कोई पद नहीं लिया।
- राष्ट्रीय स्वाभिमान को जगाया।
- अपनी वेशभूषा पर गर्व करना सिखाया।
- एक देश एक संस्कृति बताया।
- एक देश एक भाषा के महत्व को समझाया।
- हिन्दी को आर्य भाषा बताया।
- हिन्दी को माथे की बिन्दी बताया
- हिन्दी साहित्य के द्वारा क्रान्ति का सूत्रपात कराया।
- अपनी भाषा पर गर्व करना सिखाया।
- हिन्दी भाषा को सर्वप्रथम आर्य भाषा संबोधित किया।
- हिन्दी भाषा को भारत में सर्वसामान्य की भाषा बताया।

- ☞ हिन्दी भाषा में साहित्य लिखकर हिन्दी का मान बढ़ाया।
- ☞ हिन्दी भाषा को राष्ट्र एकीकरण की भाषा कहा।
- ☞ बिना उर्दू शब्दों के हिन्दी भाषा में ही अपने सारे ग्रन्थों का लेखन कार्य किया।
- ☞ जन सामान्य को समझ में आए इसलिए संस्कृत के स्थान पर हिन्दी भाषा में व्याख्यान करना निश्चित किया।
- ☞ विदेश में जाने का मार्ग प्रशस्त किया।
- ☞ विदेश जाने से कोई पाप नहीं लगता ऐसा सिद्ध किया।

- ☞ पानी जहाज की यात्रा को आवश्यक बताया।
- ☞ विदेशी व्यापार करने की बात बताई।
- ☞ विदेश से संयंत्र मंगवाने की बात कही।
- ☞ कभी कोई संपत्ति नहीं बनाई।
- ☞ अपना स्वयं का कोई घर नहीं बनाया।
- ☞ किसी प्रलोभन से विचलित नहीं हुए।
- ☞ करोड़ों की संपत्ति ठुकराई।
- ☞ गुरु के एक बार कहने पर पूरा जीवन समर्पित कर दिया।
- ☞ अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन किया।
- ☞ कभी चरित्र को दाग लगने नहीं दिया।
- ☞ समाधि को छोड़कर लोगों के दुःख दूर करने का बीड़ा उठाया।
- ☞ मरणोपरान्त मेरी समाधि नहीं बनवाना यह बताकर गये।
- ☞ अस्थियाँ और राख खेत में डालने को कहा।
- ☞ यह भी कहा कि मुझे कभी मत पूजना।
- ☞ ऐसा कहने वाला मेरे गुरु जैसा और कोई नहीं था।
- ☞ बनारस में मूर्तिपूजा का खण्डन न करने पर आपको अवतार घोषित कर देंगे। ऐसे सबसे बड़े प्रलोभन को ठुकराया।
- ☞ मानव जाति के लिये अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया।

वैसे तो मेरे प्यारे ऋषि के उपकारों को मैं गिना सकूँ यह मेरी कोई औकात नहीं। फिर भी मुझे कुछ नया करने की आदत है। आप सभी महर्षि दयानन्द के अनुयायियों को मेरी तरफ से उनकी जन्म द्विशताब्दी के अवसर पर २०० पुष्पों की माला भेंट है। स्वीकार कीजिए!

कवि ने मेरे जैसे पागल ऋषिभक्त के लिये बरसों पहले ही कुछ पंक्तियाँ लिखी थीं –

गिने जाये मुमकिन है सेहरा के जर्रे।
समुन्दर के कतरे फलक के सितारे।।
दयानन्द स्वामी मगर तेरे एहसान।
न गिनती में आये कभी हमसे सारे।।

ऋषि चरणानुरागी
–आचार्य राहुलदेवः

जो दूसरों के जख्मों पर मरहम लगाता है खुद चंगा हो जाता है

कविवर रहीम का प्रसिद्ध दोहा है-

यों 'रहीम' सुख होत है उपकारी के संग,
बाँटनवारे को लगे, ज्यों मेहंदी को रंग।

दूसरों की भलाई करने वाला उसी प्रकार से सुखी होता है जैसे दूसरों के हाथों पर मेहंदी लगाने वाले की उँगलियाँ खुद भी मेहंदी के आकर्षक रंग में रंग जाती हैं। रंग ही नहीं जाती हैं अपितु सुवासित भी हो जाती हैं। जो इत्र बेचते हैं वे खुद उसकी बू-बास से महकते रहते हैं। जिस प्रकार से एक फूल बेचने वाले के कपड़ों और बदन से फूलों की सुगंध नहीं जा सकती उसी प्रकार से दूसरों की भलाई करने वाले व्यक्ति पर उसके द्वारा की गई भलाई का अच्छा प्रभाव भी उस पर अवश्य ही पड़ता है। ऐसे व्यक्ति का कभी अहित नहीं हो सकता। दूसरों की मदद अथवा परोपकार करने का निःसन्देह बड़ा महत्त्व है।

प्रत्यक्ष रूप से ही नहीं परोक्ष रूप से भी इसका बड़ा लाभ मिलता है। एक बुढ़िया थी जो बेहद कमजोर और बीमार थी। रहती भी अकेले ही थी। उसके कंधों में दर्द रहता था लेकिन वह इतनी कमजोर थी कि खुद अपने हाथों से दवा लगाने में भी असमर्थ थी। कंधों पर दवा लगवाने के लिए कभी किसी से मिन्नतें करती तो कभी किसी से। एक दिन बुढ़िया ने पास से गुजरने वाले एक युवक से कहा कि बेटा जरा मेरे कंधों पर ये दवा लगा दे। भगवान तेरा भला करेगा। युवक ने कहा कि अम्मा मेरे हाथों की उँगलियों में तो खुद दर्द रहता है। मैं कैसे तेरे कंधों की मालिश करूँ?

बुढ़िया ने कहा कि बेटा दवा मलने की जरूरत नहीं। बस इस डिबिया में से थोड़ी सी मरहम अपनी उँगलियों से निकालकर मेरे कंधों पर फैला दे। युवक ने अनिच्छा से डिबिया में से थोड़ी सी मरहम लेकर अपने एक हाथ की उँगलियों से बुढ़िया के दोनों कंधों पर लगा दी। दवा लगते ही बुढ़िया की बेचैनी कम होने लगी और वो इसके लिए उस युवक को आशीर्वाद देने लगी। बेटा, भगवान तेरी उँगलियों को भी जल्दी ठीक कर दे। बुढ़िया के आशीर्वाद पर युवक अविश्वास से हँस दिया लेकिन साथ ही उसने महसूस किया कि उसकी उँगलियों का दर्द भी गायब सा होता जा रहा है। क्या ये बुढ़िया के आशीर्वाद का प्रभाव था?

वास्तव में बुढ़िया को मरहम लगाने के बाद युवक की उँगलियों पर कुछ मरहम लगी रह गई थी। उसने दूसरे हाथ की उँगलियों से उसे पोंछने की कोशिश की तो मरहम उसके दूसरे हाथ की उँगलियों पर भी लग गई। यह उस मरहम का ही कमाल था जिससे युवक के दोनो हाथों की उँगलियों का दर्द गायब सा होता जा रहा था। अब तो युवक सुबह, दोपहर और शाम तीनों वक्त बूढ़ी अम्मा के कंधों पर मरहम लगाता और उसकी सेवा करता। कुछ ही दिनों में बुढ़िया पूरी तरह से ठीक हो गई और साथ ही युवक के दोनो हाथों की उँगलियाँ भी दर्दमुक्त होकर ठीक से काम करने लगीं। तभी तो कहा गया है कि जो दूसरों के जख्मों पर मरहम लगाता है उसके खुद के जख्मों को भरने में देर नहीं लगती।

'दूसरों के जख्मों पर मरहम लगाना' अब इस मुहावरे को भी देख लीजिए। जरूरी नहीं जख्मों पर कोई दवा

या मरहम ही लगाई जाए क्योंकि ये जख्म भीतरी भी हो सकते हैं। मनुष्य की पीड़ा भौतिक ही नहीं मानसिक भी हो सकती है। दूसरों के जख्मों पर मरहम लगाने का अर्थ है किसी के दुखी मन को सान्त्वना देकर उसकी मानसिक यंत्रणा अथवा पीड़ा को कम करना। आवश्यकता के अनुसार किसी को कोई आश्वासन देना। पीड़ा जो भी हो कष्टदायक होती है। यदि कोई किसी को किसी भी प्रकार की पीड़ा से मुक्त करता है तो पीड़ित को बड़ी राहत मिलती है। वह पीड़ा को कम करने वाले या कष्ट को समाप्त करने वाले के प्रति कृतज्ञता से भर उठता है और आशीर्वाद या दुआएँ देने लगता है।

कृतज्ञता की अवस्था कृतज्ञ को ही नहीं मदद करने वाले को भी अच्छी लगती है। जब कोई उसके प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करता है अथवा उसका धन्यवाद करता है या किसी भी अन्य रूप में आभार प्रकट करता है तो वह एकदम विनम्र होकर परमार्थ के भावों से भर उठता है। उसका मन करता है कि मैं सदैव लोगों के कष्ट दूर करने में लगा रहूँ। दुनिया के सभी लोग कष्टमुक्त हो जाएँ। ऐसी मनोदशा अथवा स्थिति व्यक्ति के लिए आरोग्य प्रदान करने वाली होती है। ऐसी भावावस्था में व्यक्ति के शरीर में स्थित अंतःस्रावी ग्रन्थियों से लाभदायक हार्मोंस का उत्सर्जन प्रारम्भ हो जाता है जो उसे रोगों से बचाने तथा रोगग्रस्त होने पर शीघ्र रोगमुक्त करने में सहायक होते हैं।

किसी की मदद करने, कोई अच्छा काम करने अथवा निष्काम भाव से कोई समाजोपयोगी कार्य करने से समाज में व्यक्ति की प्रतिष्ठा बढ़ती है और इसके लिए लोग उस व्यक्ति की प्रशंसा भी करते हैं जिससे व्यक्ति को असीम परितुष्टि की अनुभूति होती है। यही असीम परितुष्टि की अनुभूति व्यक्ति के शरीर में उपयोगी हार्मोन सेरोटोनिन अर्थात् हैपी हार्मोन के स्तर को बढ़ा देती है जो उसके स्वास्थ्य और रोगमुक्ति के लिए बेहद उपयोगी होती है। ऐसी अवस्था व्यक्ति के दीर्घायु होने में भी सहायक होती है। दूसरों की मदद करके भी हम अपने लिए रोग-मुक्ति, अच्छा स्वास्थ्य और दीर्घायु सुनिश्चित कर लेते हैं, इसमें सन्देह नहीं।

गोस्वामी तुलसीदास कहते हैं-

पर हित सरिस धर्म नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।
निर्नय सकल पुरान बेद कर।
कहेउँ तात जानहिं कोबिद नर।।
नर सरीर धरि जे पर पीरा।
करहिं ते सहहिं महा भव भीरा।।
करहिं मोह बस नर अघ नाना।
स्वारथ रत परलोक नसाना।।

अर्थात् दूसरों की भलाई के समान कोई धर्म नहीं और दूसरों को कष्ट देने के समान कोई अधर्म, नीचता अथवा पाप नहीं। यही समस्त पुराणों और वेदों का सार है। विद्वान् लोग यह जानते हैं। मनुष्य का शरीर पाकर भी जो लोग दूसरों को कष्ट पहुँचाते हैं उन्हें स्वयं संसार के महान् कष्ट भोगने पड़ते हैं। और इस प्रकार स्वार्थ, अज्ञानता अथवा मोहवश होकर जो अनेकानेक पाप कर्मों में लिप्त रहते हैं उनका परलोक भी नष्ट हो जाता है। गोस्वामी जी आगे कहते हैं-

परहित है जिनके मन माहीं।
तिन कहुँ जग दुर्लभ कछु नाहीं।।

अर्थात् जिनके मन में परहित अथवा दूसरों की भलाई का जज़्बा बना रहता है उनके लिए संसार की कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है जो उन्हें न मिल सके। दूसरों के जख्मों पर मरहम लगाने वाला, सच्चे मन से लोगों की सेवा करने वाला आध्यात्मिक, आधिभौतिक व आधिदैविक तीनों प्रकार की व्याधियों से मुक्त होकर आनन्दपूर्वक जीवन ही नहीं व्यतीत करता वह धर्म का भी सही अर्थों में पालन करता है और यह लोक ही नहीं परलोक भी सँवार लेता है। जब भी किसी रूप में दूसरों की सेवा करने का अवसर मिले तो उसे बोझ न मानकर अपना सौभाग्य समझना चाहिए क्योंकि इसी में निहित है परमानन्द और परमैश्वर्य।

– सीताराम गुप्ता
ए. डी. १०६-सी., पीतमपुरा
दिल्ली – ११००३४

संसार के कल्याण में 'न' कहने की भूमिका

बुद्धि, मन एवं इन्द्रियों का समुदाय आत्मा का एक ऐसा साधन है, जो इस शरीर को आत्मा से जोड़ता है। शरीर रथ है, आत्मा रथी, बुद्धि सारथी, मन लगाम तथा इन्द्रियाँ घोड़े हैं, यह उपनिषत्कार का कथन है। यह रथ अपने रथी को गन्तव्य तक तभी सकुशल पहुँचा सकता है, जब रथी आत्मा का अपने सारथी बुद्धि पर नियन्त्रण हो, मन रूपी लगाम सारथी बुद्धि के द्वारा नियन्त्रित होवे और इन्द्रिय रूपी घोड़े नियत मनरूपी लगाम से सदैव नियन्त्रित रहें। संसार के विभिन्न आकर्षक मार्ग हैं। ये मार्ग बहुरंगी एवं आकर्षक हैं। इनके आकर्षण से इन्द्रियों रूपी घोड़े इधर-उधर मार्गों के आकर्षण से प्रभावित होकर स्वच्छन्द विचरण करने की प्रतिक्षण माँग करते हैं अर्थात् चाहते हैं, परन्तु लगाम के द्वारा सारथी उनकी हर माँग को नकारता रहता है। हमारे शरीर को दस घोड़े खींचते हैं। प्रत्येक घोड़े की पृथक्-पृथक् इच्छाएँ रहती है और सबकी इच्छाएँ प्रतिक्षण बदलती भी रहती हैं।

जरा कल्पना करें कि यदि सारथी प्रत्येक घोड़े की प्रत्येक इच्छा को पूर्ण करना चाहे, तब क्या वह रथ चल सकेगा? क्या उसका रथ, वह सारथी स्वयं व उसका स्वामी रथी सुरक्षित भी रह पायेगा? कदापि नहीं। यह इन्द्रियों की इच्छा को नकारने की शक्ति का ही परिणाम है कि आत्मा अपने मार्ग से भटकता नहीं और शरीर व मन भी स्वस्थ रह पाते हैं।

आज हम सभी आत्मनिरीक्षण करें कि क्या हमने कभी अपनी चंचल इन्द्रियों को 'न' कहना सीखा है? रसना की चंचलता को अनुभव करके क्या हमने उसकी इच्छा को कभी नकारने का प्रयास किया है? श्रवणेन्द्रियों, त्वक् इन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रिय, जननेन्द्रिय आदि किसी की स्वच्छन्दता को हम कभी 'न' कहने का साहस करने का प्रयत्न भी करते हैं अथवा इनकी हर स्वच्छन्दता को स्वीकार करते हुए हम इनके दास मात्र बनकर रह गये हैं? हम शरीर के राजा होकर भी अपनी सेविका इन्द्रियों को अपनी स्वामिनी बनाकर स्वयं उनके दास बनकर निरीह जीवन जी रहे हैं। जैसे निरीह पशु विवश होकर अपने स्वामी के प्रत्येक आदेश मानने के लिए विवश रहता है, वैसे ही क्या हम अपनी ही इन्द्रियों के सम्मुख निरीह व विवश पशु मात्र बनकर रह गये हैं?

आज संसार में रसना और जनन, इन दो इन्द्रियों ने मानवता को अपना बन्धक बना रखा है और बन्धक ही नहीं, अपितु इन्होंने मानवता की हत्या ही कर दी है। धन आदि साधनों की कभी न मिटने वाली भूख ने विश्व की अधिकांश सम्पदा को मात्र कुछ पूँजीपतियों के हाथों में सौंप दिया है। इन पूँजीपतियों

ने अरबों भूखे-नंगे निरीह मानवों के भाग्यों को अपनी मुट्ठी में दबा रखा है। यदि इन पूँजीपतियों में इतना साहस आ जाये कि वे अपनी इन्द्रियों की वासनाओं को 'न' कह सकें, तो विश्व में दुःख व दरिद्रता का चिह्न भी न मिले। कहीं अशान्ति, हिंसा, राग, द्वेष व वैमनस्य का साम्राज्य नहीं होगा। कहीं कोई अपराध नहीं होगा, बल्कि सर्वत्र शान्ति, मैत्रीभाव व प्रेम का प्रकाश होगा।

यह तो हुआ अपनी इन्द्रियों को 'न' कहने का परिणाम। अब जरा समाज में किसी अधर्मात्मा, जो भले ही कितना ही बलवान् क्यों न हो, को 'न' कहने पर भी विचार करें। आज बाहुबल, धन, पद व प्रतिष्ठा से सम्पन्न व्यक्ति किसी भी दुर्बल व्यक्ति से कोई भी अनुचित काम करा लेता है। दुर्बल वा निर्धन व्यक्ति का यह सामर्थ्य ही नहीं कि किसी सबल वा धनवान् व्यक्ति को कभी 'न' कह सके। इस कारण संसार में दुर्बल व धनहीन व्यक्ति का जीवन दासत्व से अभिशप्त दिखाई देता है, उन अभिशप्त जनों के मन से निकलने वाली दुःख व शोक की तरंगें समूचे ब्रह्माण्ड को दुष्प्रभावित कर रही हैं। उधर सबल व धनी व्यक्तियों के मन से निकलने वाली लोभ, क्रोध व अहंकार की तरंगें भी ब्रह्माण्ड को प्रदूषित कर रहीं हैं और इस प्रदूषण से गम्भीर प्राकृतिक प्रकोप उत्पन्न हो रहे हैं। यदि निर्धन व निर्बल व्यक्ति अपने दृढ़ धर्मभाव से आत्म-बल अर्जित करके धनी व सबलों के अन्याय व शोषण को 'न' कहने का साहस जुटा लें, तब वे अन्यायी लोग स्वयं सुधर जायेंगे और ब्रह्माण्ड का सन्तुलन ठीक हो जायेगा।

इसलिये प्रत्येक मानव का यह स्वाभाविक धर्म है कि वह प्रत्येक असत्य, अन्याय, अहिंसा व शोषण भरे विचारों एवं व्यक्तियों को 'न' कहने का साहस करे। अपनी चंचल इन्द्रियों की चंचलता को 'न' कहने का साहस करे, तभी वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी है, तभी वह परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ सन्तान कहलाने का अधिकारी है, अन्यथा उससे तो पशु ही श्रेष्ठ है, जो भले ही अपने स्वामी का दास हो, परन्तु इन्द्रियों का दास तो नहीं होता। इन्द्रियों व अन्यायी जनों के अतिरिक्त हम अपने मित्र वा सम्बन्धी जनों के अनुचित आग्रह वा परामर्श को भी मोहवश वा लोभवश नहीं नकार पाते और जीवन में अ न` क पापों को जन्म देने लगते हैं । यहाँ भी 'न' कहना हमें इन पापों से बचा सकता है।

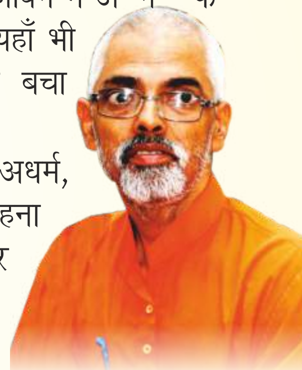

इसलिऐ आइये! अन्याय, अधर्म, अत्याचार व कुविचार को 'न' कहना सीखकर आत्मबल बढ़ाएँ और संसार को स्वर्ग बनाएँ। यही ऋषियों व वेदों का सन्देश है, आदेश है।

- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
अध्यक्ष-श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास
वेद विज्ञान मन्दिर, भीनमाल

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

पाठकों के पास 'सत्यार्थ सौरभ' डाक विभाग की अव्यवस्था के कारण अनेक बार समय पर नहीं पहुँच पाती है। पाठक न्यास को ही दोषी मानते हैं, जिसे अनुचित भी नहीं कहा जा सकता। परन्तु वास्तविकता है कि यहाँ से प्रत्येक माह की 7 तारीख को पत्रिका प्रेषित कर दी जाती है। पश्चात् सब कुछ डाक विभाग की कृपा पर निर्भर करता है। फिर भी आपसे निवेदन है कि प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।- सम्पादक

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु. 51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

सामान्य विवेक पर आधारित अनेकान्त द्वारा तनावों में कमी

गतांक से आगे ....

अध्यात्म से समृद्धि, स्वास्थ्य एवं शान्ति

बहुत कम ऐसे होते हैं जिन्हें माता-पिता, भाई-बहनों एवं मित्रों से ऐसा सन्देश न मिला हो। किसी अपेक्षा से बड़ों से एवं मित्रों से अपनी गलतियाँ मालूम होते रहना बहुत उपयोगी भी है किन्तु ये ही बातें यदि ठीक तरह से ग्रहण नहीं की जायें तो हीन भावना का कारण बन जाती हैं। वर्षा होना अच्छी बात है किन्तु यही बरसात बिना छत के मकान वाले के लिए या सछिद्र छत वाले के लिए हानिकारक हो जाती है।

अतः यह कला आवश्यक है कि हम आलोचना, उपहास आदि की वर्षा के पानी का लाभ तो ले सकें किन्तु उससे हमारा आत्मविश्वास नहीं बह जाये। इसका बहुत अच्छा छाता अनेकान्त प्रदान कर सकता है।

सोने का आभूषण थोड़ा सा टूट भी जाता है तो हमारी निगाह में उसकी कीमत कम नहीं होती है। हम उतनी ही सुरक्षा के साथ उसे लॉकर में या सुरक्षित स्थान पर रखते हैं। यदि कोई आभूषण नई फैशन के अनुसार न हो तो भी उसकी कीमत हमारी निगाह में कम नहीं होती है- क्योंकि हम जानते हैं कि इसको चाहें तो नई फैशन में भी बदलवा सकते हैं। क्या यही बात हम हमारे मनुष्यपने या आत्मा पर नहीं लागू कर सकते? जरा विचार करें कि निम्नलिखित विकल्पों में से कौन सा सही विकल्प है?

- ★ हम असली कीमत हमारे मनुष्यपने या आत्मा की मानें व अन्य की आलोचनाओं पर ध्यान न दें।
- ★ हम हमारी शरीर की शक्ति, सुन्दरता, बुद्धि, चतुराई, धन, परिवार, मित्रगण आदि के आधार पर अपना मूल्यांकन करें।
- ★ अनेकान्तवादी दृष्टिकोण अपनाएँ। हमारे विकास हेतु अपनी कमियों एवं मित्रों की आलोचनाओं को नजरअंदाज भी न करें व इन आलोचनाओं के आधार पर अपने को छोटा या हीन या तुच्छ भी न समझें क्योंकि हमारा असली मूल्य हमारे मनुष्यपने या आत्मा का है।

यदि हम केवल उक्त पहला विकल्प ही अपनाते हैं व दूसरों की आलोचना नहीं मानते हैं व अपने विकास पर ध्यान नहीं देते हैं तो जीवन का विकास प्रभावित हो सकता है व यदि दूसरों के कथनों के आधार पर तथा अपनी भौतिक उपलब्धियों के आधार पर ही अपना मूल्यांकन करते हैं तो हीन भावना से ग्रसित होकर दुःखी होने के मार्ग पर हो जायेंगे, अतः उक्त तीनों में से तीसरा विकल्प भौतिक विकास की दृष्टि से उचित होगा।

अच्छा मित्र वही कहलाता है जो सदैव हर परिस्थिति में मित्र के प्रति मित्रता का भाव रखता हो। क्या हम स्वयं के अच्छे मित्र नहीं हो सकते हैं? यदि हम स्वयं को हर अवस्था में प्यार करते हैं एवं स्वयं से घृणा नही करते हैं तो हम कह सकते हैं कि हम स्वयं के भी अच्छे मित्र हैं। यह मित्रता निश्चित ही प्रसन्नता प्रदान करती है।

कुछ सुझाव

- हम यदि स्वयं को तुच्छ, या हीन नहीं समझेंगे तो दूसरों की आलोचना से दुःखी नहीं होंगे। दूसरे लोग जब हमारी आलोचना करते हैं तो वह आलोचना दुःख का कारण तभी बनती है जब उसमें हाँ में हाँ मिलाते हुए हम स्वयं भी स्वयं की आलोचना कभी किस आधार पर और कभी किस आधार पर करते रहें या दूसरों के कथनों के आधार पर हर समय अपने आप का विश्लेषण विभिन्न रुपों में करते रहें। रेल मोटर में सफर करते हुए अपने पास जेब में रखे हुए रुपयों की सुरक्षा रखना आवश्यक है। किन्तु यदि हम बार-बार अपनी जेब को सम्भालते रहें तो हमारी यात्रा कष्टप्रद हो सकती है व जेब कटने की सम्भावना भी बढ़ सकती है। ट्रेन में हम जब सफर कर रहे हों व कोई व्यक्ति यदि आकर यह कहे कि 'भाई साहब! आपकी जेब सम्भाल कर रखना, कहीं कट न जाए।' तब यह सुनकर हमारी जेब को संभालना क्या उचित है? इसका उत्तर यही होगा कि उचित नहीं है। इसी प्रकार किसी भी व्यक्ति की आलोचना सुनकर तत्काल अपने व्यवहार या उपलब्धि का विश्लेषण करना कहाँ तक उचित है? इसका उत्तर भी यही होगा कि उचित नहीं है। अतः आलोचना से उत्पन्न दुःख से बचने का प्रथम उपाय यह है कि आलोचना सुनते ही स्वयं अपनी आलोचना का विश्लेषण करना शुरू न करें। हम हमारा विश्लेषण समय-समय पर नियमित रूप से करते रहें किन्तु लगातार हर समय हमें हमारे मनुष्यपने या शाश्वत आत्मा को कीमती मानते हुए अन्य उपलब्धियों एवं व्यवहार के आधार पर मूल्यांकन एवं विश्लेषण नहीं करते रहना चाहिए।
- ट्रेन में यात्रा करते हुए सभी सहयात्रियों पर पूर्ण विश्वास रखना भी बुरा एवं कष्टदायक हो सकता है। हमारा सहयात्री यदि थोड़ी सी सुविधा के कारण हमारे सूटकेस को थोड़ा सा खिसकाने के उद्देश्य से छू लेता है तो हमें ऐसा नहीं लगता है कि यह सहयात्री हमारा सूटकेस उठाकर ले जाना चाहता है। यही बात हमारी जीवनयात्रा पर लगनी चाहिए। किसी प्रयोजन से हमारा मित्र या परिचित कभी हमारे बारे में कुछ ऐसा कहता है कि उसका उद्देश्य आलोचना का नहीं रहता है किन्तु हमें ऐसा लग सकता है कि यह व्यक्ति हमारी आलोचना करना चाहता है। इस प्रकार की आलोचना के आभास के दुःख से बचने हेतु थोड़ा अभ्यास आवश्यक होगा। जब-जब ऐसी स्थिति से कष्ट हो तब-तब यह प्रतिप्रश्न स्वयं से करना चाहिए कि 'क्या इन शब्दों का अर्थ आलोचना के अतिरिक्त दूसरा नहीं हो सकता है?' इस प्रकार के प्रयास प्रारम्भ में ध्यान पूर्वक करने की आवश्यकता होगी किन्तु अभ्यास के बाद सब कुछ सहज में ही हल होता रहेगा।
- प्रतिदिन कुछ मिनटों के लिये हम यह याद करने का अभ्यास करें कि हमारी असली कीमत हमारे मनुष्यपने या आत्मा की है। दिन में एक से अधिक बार यह तथ्य ध्यान में लाने का प्रयास किया जाना उपयोगी हो सकता है।
- उचित भोजन, विश्राम, प्रार्थना, ध्यान आदि के लिए उचित समय निकालने का प्रयास करना चाहिए। स्वयं को तुच्छ मानने वाला व्यक्ति भोजन, विश्राम, प्रार्थना आदि पर ध्यान नहीं देता है। इन बातों पर ध्यान देने से 'स्वयं' महत्ता जागृत होती है।
- आत्मविश्लेषण के लिये प्रतिदिन या प्रति सप्ताह कुछ समय निश्चित किया जाना चाहिये। आत्म विश्लेषण हर समय या जब-तब नहीं करते रहना चाहिए।

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक नार्मन विंसेंट पील उनकी पुस्तक Inspiring Messages For Daily Living में लिखते हैं- "Don't wear yourself out with yourself. ...Much tiredness is the result of extreme self & preoccupation. Introspection, concern about comfort, prerogatives and position can consume a large share of one's energy."

इसका भावार्थ यह है कि स्वयं के बारे में अधिक सोच सोच कर थको मत। बहुत ज्यादा थकान स्वयं के मामले में ही व्यस्त रहने पर आती है। पदवी का ख्याल, विशेष महत्त्व पाने का ख्याल, आराम एवं सुविधा का ख्याल, आत्म विश्लेषण आदि से व्यक्ति की बहुत ज्यादा शक्ति खर्च हो सकती है।

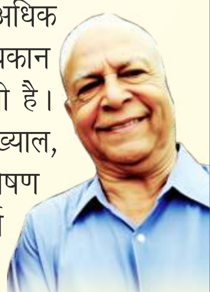

लेखक- डॉ. पारसमल अग्रवाल
११ भैरवधाम कॉलोनी
सेक्टर-३, हिरणमगरी, उदयपुर (राज.)

वेद चार हैं। चार वेदों का ज्ञान अनादि व नित्य ज्ञान है जो सदैव व सर्वदा परमात्मा के ज्ञान में विद्यमान रहता है। यह चार वेद ईश्वर प्रदत्त बीज-रूप में सब सत्य विद्याओं का ज्ञान है जो सृष्टि के प्रारम्भ में सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान तथा सर्वज्ञ परमात्मा से परमात्मा द्वारा उत्पन्न आदि चार ऋषियों यथा अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा को प्राप्त हुआ था। परमात्मा निराकार एवं सर्वान्तर्यामी ज्ञानवान सत्ता है। वह सभी जीवों एवं संसार के पदार्थों में व्यापक होने के कारण ऋषि तुल्य चेतन जीवात्माओं को प्रेरणा देकर उन्हें ज्ञान प्राप्त करा सकती है। परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में अग्नि ऋषि को ऋग्वेद, वायु ऋषि को यजुर्वेद, आदित्य ऋषि को सामवेद तथा अंगिरा ऋषि को अथर्ववेद का ज्ञान दिया था। हम यह भी कह सकते हैं कि परमात्मा ने इन चार आदि ऋषियों की आत्माओं में एक-एक वेद का ज्ञान स्थापित किया था। इस ज्ञान को प्राप्त कर ही ऋषियों को बोलना वा बात करना आया और उन्होंने सृष्टि की आदि में उत्पन्न अन्य मनुष्यों को बोलना सिखाया व वेदज्ञान की आवश्यक व उपयोगी सभी बातों से परिचित कराया था। यहीं से वेदाध्ययन वा वेद पठन-पाठन की परम्परा जिसे श्रुति परम्परा कहा जाता है, आरम्भ हुई थी।

अथर्ववेद के काण्ड १० सूक्त २ मन्त्र ३१ में मानव शरीर का वर्णन करते हुए प्रसिद्ध मन्त्र आया है जो कि निम्न है-

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या।
तस्यां हिरण्ययः कोशःस्वर्गो ज्योतिषावृतः।।

इस मन्त्र का वेद भाष्यकार पं. विश्वनाथ विद्यालंकार वेदोपाध्याय द्वारा किया गया पदार्थ वा शब्दार्थ निम्न है- **(अष्टाचक्रा)** आठ चक्रों वाली, **(नवद्वारा)** नौ द्वारों वाली, **(देवानाम्, पूः)** इन्द्रिय-देवों की पुरी **(अयोध्या)** अयोध्या है। **(तस्याम्)** उस पुरी में **(हिरण्ययः)** सुवर्ण सदृश चमकीला **(कोशः)** कोश है, **(स्वर्गः)** जिसे कि स्वर्ग कहते हैं, **(ज्योतिषाआवृतः)** जो कि ब्राह्मी ज्योति द्वारा घिरा हुआ है।

यह वेदार्थ संस्कृत आर्ष व्याकरण द्वारा इस मन्त्र का किया गया प्रमाणित अर्थ है। मन्त्र में बताया गया है कि मानव देवों का शरीर आठ चक्रों वाला तथा नौ द्वारों वाला है। यह आठ चक्र एवं नव द्वारों से युक्त इन्द्रियवान्-देवों की पुरी अयोध्या है। हमारे इस शरीर में सुवर्ण सदृश चमकीला कोश (हृदय) है जिसे स्वर्ग कहते हैं। यह स्वर्ग वा कोश ब्राह्मी-ज्योति (सर्वव्यापक परमात्मा) से घिरा हुआ है।

अष्ट-चक्रों का उल्लेख कर भाष्यकार लिखते हैं कि अष्टचक्रा=सुषुम्णा नाड़ी और मस्तिष्क में आठ चक्र हैं, यथा- "मूलाधार-चक्र, स्वाधिष्ठान-चक्र, मणिपुर-चक्र, अनाहत-चक्र, विशुद्ध-चक्र, आज्ञा-चक्र, सहस्रार-चक्र। आठवाँ चक्र सम्भवतः ब्रह्मरन्ध्र है, जो कि आज्ञा-चक्र

और सहस्रार चक्र के मध्यवर्ती है। अथवा आठवाँ चक्र सम्भवतः 'कुण्डलिनी' है।" इनका विस्तृत विवरण 'पातंजल योगप्रदीप' ग्रन्थ जो आर्य साहित्य मण्डल, अजमेर से प्रकाशित हुआ था, में उपलब्ध है। अब यह पातंजल योगप्रदीप ग्रन्थ गीता प्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित हुआ भी प्राप्तव्य है।

शरीर के नव द्वारों का उल्लेख कर भाष्यकार पं. विश्वनाथ विद्यालंकार जी लिखते हैं कि नवद्वारा=दो आँखों के छिद्र, दो नासिका रन्ध्र, दो कर्ण छिद्र, १ मुख का छिद्र, १ लिंग का, और १ गुदा का छिद्र-ये ६ द्वार हैं। अयोध्या का अर्थ बताते हुए पंडित जी लिखते हैं कि अयोध्या=परमेश्वर प्रदर्शित मार्गों पर चलने से रोग, तथा काम क्रोध आदि शत्रुओं द्वारा शरीर-पुरी पराजित नहीं होती, और न रोग आदि इस पुरी के साथ युद्ध करने की शक्ति ही रखते हैं। हृदय को हिरण्य कोश कहा है जो कि ब्राह्मी ज्योति द्वारा आवृत है, यह हृदय स्वर्ग है, जहाँ कि ब्रह्म के सन्निधान (ध्यान वा उपासना आदि) द्वारा सुख-विशेष की प्राप्ति होती है।

हमने यह लेख इसलिए लिखा है कि हमारे सनातनी विद्वान् मन्त्र में अयोध्या शब्द को देखकर इसे वर्तमान उत्तर प्रदेश की रामनगरी "अयोध्या" का वाचक स्वीकार करते हैं। यह तथ्य है कि वेद सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न हुए थे। इस कारण इसमें सृष्टि का इतिहास नहीं है। अयोध्या नाम बाद में जब यहाँ लोग बसे थे तथा दशरथ जी व उनके पूर्वजों ने राज्य किया, उनमें से किसी आदि पूर्वज द्वारा इसका नामकरण अयोध्या नाम से किया गया होगा। सृष्टि उत्पन्न होने के समय संसार की समस्त भूमि पर जितने नगर व गाँव आदि बसे हुए हैं उनमें से किसी का कोई नाम नहीं था। सब स्थान नामों से रहित थे। वर्तमान के प्रचलित व कुछ पुराने नाम जो बदल दिये गये, सृष्टि व वेद उत्पत्ति के बाद सृष्टि में उत्पन्न मनुष्यों वा महापुरुषों ने रखे हैं और इसमें, शब्द चयन में, वेदों की सहायता ली गई है। इस आशय के श्लोक भी प्राचीन साहित्य में उपलब्ध होते हैं। हमारे जो विद्वान् वेदमन्त्र में प्रयुक्त 'अयोध्या' शब्द को वर्तमान अयोध्या नगरी का पर्यायवाची शब्द मानते हैं वह उचित नहीं है। मन्त्र का वही अर्थ है जो संस्कृत व्याकरण के अनुसार पं. विश्वनाथ विद्यालंकार वेदोपाध्याय जी ने किया है। हमें वेदों का पं. विश्वनाथ विद्यालंकार जी द्वारा किया गया अर्थ ही स्वीकार करना चाहिये और इससे भिन्न कल्पना नहीं करनी चाहिये।

- १९६ चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१
चलभाष- ०९४१२९८५१२१

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

अशोक आर्य	भवानीदास आर्य	डॉ. अमृत लाल तापड़िया
अध्यक्ष-न्यास	मंत्री-न्यास	संयुक्तमंत्री-न्यास

स्वास्थ्य

तिल के गुण धर्म एवं आत्ययिक प्रयोग

तिल शीतकाल का शक्तिप्रद खाद्य पदार्थ है। सर्दी के मौसम में तिल के लड्डू, तिल पपड़ी, तिल की मिठाई आदि के रूप में विभिन्न प्रकार से इसका बहुत प्रयोग किया जाता है। अतः इसके गुण धर्म की जानकारी होना आवश्यक है।

गुण धर्म

तिल गुरु, स्निग्ध, मधुर, अनुरस में कषाय, तिक्त, उष्णवीर्य व प्रभाव में केश्य है। वातशामक, कफ पित्त प्रकोपक व योगवाही होने से अन्य द्रव्यों के संयोग से त्रिदोषशामक, दीपन, ग्राही, शूल प्रशमन, दाँतों को हितकर, तेदवार भापक संघानीय, व्रणशोधन रोपण, मेध्य, रक्तस्रावरोधक, श्वासनलिका गत रुक्षता नाशक, अल्पमूत्रकारक, वाजीकरण, आर्तवजनन, स्तन्यजनन, बल्य, वृष्य व त्वचा के लिए हितकर है। वातविकार, मस्तिष्क दौर्बल्य, अग्नि मांद्य, हिक्का, श्वास आदि वात प्रधान रोगों में इसका प्रयोग किया जाता है। तैल में कृमिघ्न गुण की विशेषता होने से प्राचीन काल में मृत शरीर को सुरक्षित रखने के लिए इसका उपयोग किया जाता था। तैल का सामान्य अर्थ **'तिलस्येदं'** तिल से उत्पन्न ही है। व्यवहार में भी तिलतैल अधिक उत्तम होता है। सुश्रुत के सूत्रस्थान में कहा है- **'सर्वेभ्यस्त्विदं तैलेभ्यस्तिलतैलं विशिष्यते'।**

रासायनिक संघटन

तिलों में स्थिर तैल ५०-६०% (सफेद में ४८% लाल व काले में ४६%), प्रोटीन २२%, कार्बोहाइड्रेट १८% पिच्छिल द्रव्य ४% होता है। लगभग १०० ग्राम तिलों में १०.५ मि.ग्राम लोहा, १.४५ ग्राम कैल्सियम, .५७ ग्राम फास्फोरस होता है। तिलों में विटामिन बी. (थियामिन) की भी अधिकता होती है, जो क्षुधा वर्धक, पाचक व स्नायविक स्वास्थ्य रक्षक है।

तिल का रोगानुसार प्रयोग

काले तिल उत्तम होते हैं। तिल स्नेहन, सारक, पौष्टिक, मूत्रल, बालों के लिए हितकारी, त्वचा को साफ करने वाले, दाँतों को मजबूत करने वाले, दूध बढ़ाने वाले व मस्तिष्क शक्तिवर्धक है। गर्भवती स्त्री को तिल नहीं खाने चाहिए।

कब्ज- ६० ग्राम तिल कूटकर मीठा मिलाकर खाने से कब्ज दूर होती है। तिल, चावल व मूंग की खिचड़ी भी कब्ज को दूर करती है।

रुक्षता- तिल के तैल की मालिस करने से शरीर की रुक्षता मिट जाती है।

अर्श (पाइल्स)- ६० ग्राम काले तिल खाकर ऊपर से ठण्डा पानी पीने से बिना रक्तस्राव वाले अर्श ठीक हो जाते हैं। दही के साथ सेवन करने से रक्त भी बन्द हो जाता है। नियमित रूप से तिल तैल मस्सों पर लगाने से लाभ होता है। बवासीर के रोगी को कब्ज के लिए काले तिल, मक्खन व मिश्री एक-एक चम्मच मिलाकर नित्य प्रातः काल खाने चाहिए। याद रक्त गिरता हो तो दिन में तीन बार खाने चाहिए।

कैल्सियम- प्रतिदिन जितने कैल्शियम की शरीर को जरूरत है उतना ५० ग्राम तिलों से प्राप्त हो जाता है।

शक्तिवर्धनार्थ- तिलों में विद्यमान प्रोटीन से मांस-पेशियाँ मजबूत होती हैं। इसमें पाये जाने वाले

लेसीथीन द्रव्य से मस्तिष्क के स्नायु व मांसपेशिया शक्तिशाली होते हैं। इनमें विटामिन बी. कम्प्लेक्स भी बहुत मिलता है। समान मात्रा में तिल व गुड़ को मिलाकर लड्डू बनाकर प्रातः सायं एक-एक लड्डू खाकर दूध पीने से शारीरिक व मानसिक दुर्बलता दूर होती है। तनाव दूर होता है। बुढ़ापा जल्दी आने को तिल रोकता है।

शैय्यामूत्र व बार-बार अधिक पेशाब होना– ५० ग्राम काले तिल, २५ ग्राम अजवाइन, १०० ग्राम गुड़ मिलाकर रख लें। ८-८ ग्राम सुबह-शाम खाते रहने से अधिक पेशाब आना, बार-बार पेशाब जाना व बच्चों का बिस्तर पर पेशाब करना बन्द हो जाता है।

बालों के लिए हितकारी– प्रतिदिन तिल खाने से बाल लम्बे, मुलायम व काले होते हैं। बालों में तिल के तैल की मालिस के आधे घण्टे बाद एक तौलिये को गर्म पानी में भिगोकर, निचोड़ कर सिर पर लपेट लें। ठण्डा होने पर पुनः गर्म पानी में भिगोकर निचोड़कर लपेट लें। इस प्रकार पाँच मिनट गर्म कपड़ा सिर पर लपेट कर रक्खें। बाद में ठण्डे पानी से सिर को धो लेवें। इससे बालों की रूसी दूर हो जायेगी।

दाँतों की मजबूती– प्रातः खाली पेट दाँत साफ करने के पश्चात् ५० ग्राम काले तिल खूब चबाकर खायें, इसमें मीठा नहीं मिलायें। ऊपर से १ गिलास ठण्डा पानी पीयें। चाहें तो रात को भी इस प्रकार से तिल खा सकते हैं। इससे दाँत मजबूत होंगे।

खाँसी– चार चम्मच तिल बराबर मात्रा में मिश्री मिलाकर एक गिलास पानी में इतना उबालें कि आधा पानी रह जाये। इसे दिन में तीन बार पीने से सर्दी लगकर आने वाली सूखी खाँसी ठीक हो जाती है।

चोट मोच पर– तिल की खल पीसकर पानी डालकर गर्म करें। इसे गर्म-गर्म मोच पर बाँधने से दर्द में आराम होता है।

जलने पर– तिलों को पानी में चटनी के समान पीसकर मोटा लेप करें।

वात रोग पर– तिल के तैल की मालिस करने से लाभ होता है।

बिवाई फंटना– देशी भोग १ भाग व तिल का तैल ४ भाग मिलाकर गर्म कर मलहम बनाकर बिवाइयों पर लगाने से लाभ होता है।

अल्प रजः स्राव– आठ चम्मच तिल, १० काली मिर्च पीसी हुई, स्वाद के अनुसार गुड़ को १ गिलास पानी में डालकर उबाले। आधा पानी रहने पर दिन में दो बार पीवें। मासिक धर्म आने के १५ दिन पूर्व से आरम्भ करके मासिक धर्म आने तक पीती रहें। इससे मासिक धर्म खुलकर साफ आता है।

लेखक- वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त चिकित्साधिकारी
आयुर्वेद विभाग, राजस्थान

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री के. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत, श्री रामजीवन मिश्र; जयपुर, श्रीमती ममता आर्या; नई दिल्ली, श्री यश आर्य; कोलकाता

कहानी दयानन्द की

कथा सरित

महर्षि दयानन्द अब बगरू और दूदू होते हुए पुष्कर पहुँचे। वहाँ पुष्कर के प्रसिद्ध ब्रह्मा मन्दिर में आपने निवास किया। सम्पूर्ण जीवन में स्वामी जी की यही विशेषता हमें दिखाई देती है कि जिस बात को वह सत्य मानते थे उसे कहीं भी कहने से उन्हें झिझक नहीं होती थी, यहाँ भी ऐसा ही था। यद्यपि वे ब्रह्मा जी के मन्दिर में ठहरे थे, परन्तु प्रतिमा पूजन का निषेध करने में उन्हें संकोच नहीं होता था। स्वामी जी के जीवन चरित्र के साथ हम जैसे-जैसे आगे बढ़ेंगे हम उनके मन्तव्यों को भी देखने का प्रयास करेंगे, जो ज्यादा लाभकारी होगा। पुष्कर के एक रईस के साथ उनका जब वार्तालाप हुआ तो स्वामी जी ने कहा- यदि हमसे कोई पूछे तो हम स्पष्ट कह दें कि विद्वान् ब्राह्मण के सिवाय अन्य किसी को संन्यास ग्रहण करने का अधिकार नहीं है। यहाँ ब्राह्मण से तात्पर्य जन्मगत ब्राह्मण से नहीं परन्तु विद्वान् से ही है। यह मत स्वामी जी का प्रारम्भ से रहा और अन्त तक यही स्थिर रहा। बात भी ठीक है जैसा संन्यासी स्वामी जी चाहते थे वह सभी सांसारिक प्रलोभनों से विमुक्त होना चाहिए और इसके लिए पूर्ण विद्वान् होना ही होगा।

यहीं पर स्वामी जी का साक्षात्कार कुछ रामानुज सम्प्रदाय वालों से हुआ। उनके मत में 'तप्ततनुः स्वर्गं गच्छति' कहा जाता और माना जाता है। अर्थात् शरीर को दग्ध करने से स्वर्ग मिलता है। स्वामी जी ने इसका सत्य अर्थ करते हुए कहा कि- 'शरीर को तपाना तप नहीं है परन्तु व्रत, तप, नियम से शरीर को तपाने और मन को विषयों से रोक कर जप आदि में लगाने से सुख होता है। यह नहीं कि शरीर को नाना प्रकार से कष्ट देने से स्वर्ग मिलता है।'

पुष्कर के प्रकरण को तब तक सम्पूर्ण नहीं माना जाएगा। जब तक ब्रह्मा जी के मन्दिर के एक पुजारी शिवदयाल जी का हम जिक्र न कर दें। स्वामी जी उसे निरन्तर प्रेरणा देते रहते थे। उसका परिणाम यह हुआ कि शिवदयाल जी ने कण्ठी उतार दी। घाटों पर भिक्षा माँगना छोड़ दिया तथा पुजारी का कार्य भी छोड़ दिया और वह डाकखाने में नौकरी करके जीवन निर्वाह करने लगे।

यहाँ एक बात और उल्लेखनीय है कि यद्यपि स्वामी जी का मत अभी भी शैवमत की ओर झुका हुआ था और उन्होंने इतने लोगों की कण्ठियाँ उतरवा दी थीं कि ब्रह्मा के मन्दिर में एक बार तो एक बालिश्त ऊँचा कण्ठियों का ढ़ेर लग गया। परन्तु शिव के बारे में उनका स्पष्ट कथन था जो कि उन्होंने पण्डित गंगाराम को कहा कि- 'शिव कल्याण करने वाले का नाम है उसे हम मानते हैं, परन्तु पार्वती के पति शिव को नहीं मानते।'

यहाँ से स्वामी जी अजमेर पधारे तो सन् १८६६ का जून मास आ चुका था। अजमेर में वह बंशीधर के रिश्तेदार के बाग में ठहरे। उस समय उनके कण्ठ में रुद्राक्ष की माला, मस्तक पर विभूति थी।

पुष्कर का यह प्रवास उनका लगभग दो मास का रहा।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

समाचार

नहीं रहे प्रख्यात शिक्षाविद् डॉ. राम प्रकाश जी

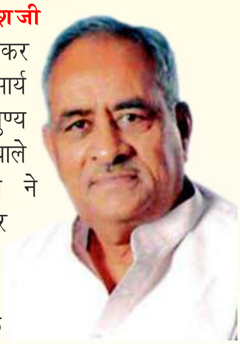

हरियाणा की रत्नप्रसूता धरा पर जन्म लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक महर्षि दयानन्द, आर्य समाज एवं भारतीय ज्ञान परम्परा की पुण्य सलिला सरिता को प्रवाहित करने वाले श्रद्धेय प्रोफेसर डॉ. रामप्रकाश जी ने मार्गशीर्ष शु.१, २०८० बुधवार तदनुसार १३ दिसम्बर, २०२३ को सुबह ४ बजकर १५ मिनट पर चिर विदाई ले ली। शैक्षणिक, सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र के विविध प्रकल्पों में कार्य करने के बाद भी स्वयं के जीवन को एकात्मता से जिस मिशन के लिए आपने समर्पित किया था वह था - महर्षि दयानन्द द्वारा प्रशस्त वैदिक ज्ञान मनीषा का वैश्विक विस्तार... अपनी ऊर्जावान् लेखनी एवं अपूर्व वाक् शक्ति से इस उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए आपने स्वयं को सर्वात्मना समर्पित कर दिया था।

जीवन के अन्तिम क्षण तक (८४ वर्ष) साधना के लिए समर्पित ऐसा उदाहरण अन्यत्र दुर्लभ है। उनका व्यक्तित्व ईश्वर भक्ति, उत्साह एवं आशा से परिपूर्ण था।

वे भावी भारत की युवा पीढ़ी को अनुशासित, ईश्वरीय बोध से अनुप्राणित एवं महर्षि दयानन्द तथा वैदिक शिक्षा से दीक्षित देखना चाहते थे। आपकी यह अन्तर्दृष्टि हम सबकी प्रेरिका बने, यही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

वे पूर्व राज्य सभा सांसद, पूर्व मंत्री हरियाणा सरकार, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के पूर्व उप कुलपति, दयानन्द महिला महाविद्यालय कुरुक्षेत्र के चेयरमैन, पंजाब यूनिवर्सिटी के पूर्व प्रोफेसर भी रहे। आर्य जगत् व समाज के दबे पिछड़े वर्गों के लिये उनके योगदान को स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा। सत्यार्थ प्रकाश न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से ऐसे महामना को कोटि-कोटि नमन।

- अशोक आर्य; अध्यक्ष-न्यास

महर्षि दयानन्द की २००वीं जयन्ती की व्यवस्था हेतु बैठक सम्पन्न

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द की २००वीं जयन्ती का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर १० से १२ फरवरी २०२४ को टंकारा राजकोट (गुजरात) में भव्य आयोजन होगा। आर्यसमाज के प्रवक्ता विनय आर्य

ने बताया कि ज्ञान ज्योति आयोजन समिति के आह्वान पर दिल्ली आर्य सभागार ग्रेटर कैलाश पार्ट-१ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाओं, दिल्ली की आर्य संस्थाओं, डीएवी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा व देश भर के गुरुकुलों के अधिकारी व कार्यकर्त्ता सम्मिलित हुए। इस विशेष बैठक में २००वीं जयन्ती पर २ वर्षीय कार्य योजना की पूर्ण प्रस्तुति व विभिन्न कार्यक्रमों के निर्धारण और आर्य संगठनों की

भूमिका के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। इस अवसर पर Maharshidayanand.Com वेबसाइट का शुभारम्भ मुख्य तौर पर सबके लिए आकर्षण का केन्द्र रहा। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी सारी जानकारी आपको इस वेबसाइट पर उपलब्ध मिलेगी। उनका जीवन परिचय, कार्य, साहित्य सब कुछ अब आप एक ही जगह पढ़ सकते हैं। कई और नए प्रोजेक्ट्स का शुभारम्भ भी किया गया। इन प्रोजेक्ट्स में यज्ञ मिस्ड कॉल सेवा, आर्य समाज परियोजना मिस्ड कॉल सेवा, महर्षि दयानन्द मिस्ड कॉल सेवा, आर्य समाज इतिहास लेखन, वेद पाठी परिवार निर्माण, आर्य परिवार सम्पर्क योजना, सैंकड़ों वाहन टंकारा यात्रा शामिल हैं। ऋषि हमारा, दयानन्द प्यारा, चलो टंकारा। इस विशेष बैठक में डीएवी कॉलेज प्रबन्धक समिति और टंकारा ट्रस्ट के प्रधान पद्मश्री डॉ पूनम सूरी ने जहाँ सभी को टंकारा पहुँचने का आह्वान किया वहीं ये नारा देकर सब में नया जोश भर दिया। इस बैठक में डीएवी कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति और टंकारा ट्रस्ट के प्रधान पूनम सूरी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रमुख सुरेश चन्द्र आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य, जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन व ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति के प्रधान सुरेन्द्र कुमार आर्य, सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रमुख डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती ने भी प्रेरक विचार रक्खे।

निःशुल्क कैंसर जाँच शिविर का आयोजन

बीते दिनों दिल्ली आर्य प्रतिनिधिसभा के तत्वावधान में आर्य समाज मन्दिर जहाँगीर पुरी द्वारा निःशुल्क कैंसर जाँच शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें राजीव गाँधी कैंसर इंस्टीट्यूट एवम् रिसर्च सेन्टर, रोहिणी दिल्ली के डाक्टरों ने लोगों की निःशुल्क कैंसर जाँच की। इस अवसर पर दिल्ली आर्यवीर दल के महामंत्री श्री बृहस्पति आर्य जी एवं आर्य समाज के कार्यकर्त्ता उपस्थित रहे।

पुलिस अधिकारी बनीं आचार्या

मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी को सम्बोधित एक खुले पत्र में, (जिन्होंने उन्हें पुलिस की नौकरी में बहाल करने की पेशकश की थी), पूर्व डीएसपी नलिनी ने इस प्रस्ताव को स्वीकार करने से इनकार कर दिया और कहा कि उन्होंने अब अपना जीवन महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपदेश के अनुसार वेद के उपदेशों के लिए समर्पित करने का फैसला किया है।

नलिनी २००६ में मेडक जिले की पुलिस उपाधीक्षक (डीएसपी) थीं, जब उन्होंने राजनेताओं के हस्तक्षेप तथा अपने विरुद्ध कार्यवाहियों से परेशान होकर तत्कालीन आन्ध्र प्रदेश सरकार के तहत काम करने से इनकार करते हुए अपने पद से इस्तीफा दे दिया और तेलंगाना राज्य आन्दोलन में शामिल हो गईं।

उन्होंने अपने त्याग पत्र में लिखा, 'मैं अब एक असंवेदनशील सरकार के तहत काम करना जारी नहीं रख सकती जो ३.५ करोड़ तेलंगाना

लोगों की आकांक्षाओं को नहीं समझ सकती।' १५ दिसम्बर, २०२३ को तेलंगाना के नए मुख्यमंत्री ने उन्हें नौकरी वापस देने की पेशकश की, इस पर नलिनी ने उन्हें लिखा, "इतने सालों के बाद आप मेरी मौत के कारणों का पता लगाने के लिए पोस्टमॉर्टम करने की कोशिश कर रहे हैं।" उसने कहा कि वह इन सभी वर्षों में एकान्त कारावास में थी क्योंकि उसके करीबी रिश्तेदारों ने उसे तब छोड़ दिया जब उसे उनकी सबसे ज्यादा जरूरत थी।

उन्होंने कहा कि दो साल पहले वह स्वामी दयानन्द सरस्वती के उपदेश से आकर्षित हुई और उन्होंने उनकी शिक्षाओं का पालन करने का फैसला किया। 'आज मेरी खोज दिव्यता पूर्ण 'अष्टांग योग' की है। नलिनी ने कहा, मैं अपना जीवन सनातन धर्म के प्रसार के लिए समर्पित कर दूँगी। उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि वह सरकार से किसी अन्य वैकल्पिक नौकरी की पेशकश को स्वीकार नहीं कर पायेंगी।" भगवान शिव की कृपा से मैंने अपराधशास्त्र से दर्शनशास्त्र की ओर अपना मार्ग बदल लिया। अब मैं आचार्य बन गयी हूँ। एक डीएसपी से लेकर डीएनए तक। अब मुझे कोई भी सस्पेंड नहीं कर सकता। यह पद स्थायी है।

नलिनी ने मुख्यमंत्री को आगे लिखा- अगर आप अभी भी मेरी मदद करना चाहते हैं, तो एक फण्ड के माध्यम से मेरी मदद करें जिसका उपयोग मैं एक संस्कृति-आधारित 'धार्मिक ट्रस्ट' की स्थापना के लिए कर सकूँ।

वे अपनी पुस्तक 'वेदम यज्ञम्' के हिन्दी संस्करण के अनुवाद और प्रकाशन में लगी हुयी हैं। उन्होंने कहा कि वह अपना काम पूरा करेंगी और सीएम से मिलेंगी।

राजीव गुलाटी जी की अर्थगंगा हो रही है प्रवहमान

सभी जानते हैं कि पद्मभूषण पूज्य महाशय धर्मपाल जी ने अपने सम्पूर्ण जीवन में परमार्थ के कार्यों में जी भर के अर्थ सहयोग प्रदान किया। आर्य समाज की सम्भवतः कोई ही ऐसी संस्था होगी जिनको उनका अर्थ सहयोग न मिला होगा। अपने पूज्य पिता के उसी क्रम का अनुसरण करते हुए आर्य पुत्र के रूप में आदरणीय श्री राजीव गुलाटी जी इस परम्परा को और भी उत्साह के साथ आगे बढ़ा रहे हैं। हम कह सकते हैं कि कोई दिन ऐसा नहीं जाता होगा जबकि वे परोपकारार्थ अपनी पुण्य से संचित कमाई को योग्य लोगों में वितरित नहीं करते। ऐसी ही बहुत सारी सूचनाओं के बीच में निम्न सूचना को भी पढ़ने का श्रम करें। परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि ऐसे पुण्य में संलग्न आदरणीय भाई राजीव जी गुलाटी को हर प्रकार का सामर्थ्य, प्रभु दें ताकि परोपकार के यज्ञ में उनकी प्रभूत आहुति सदा सर्वदा लगती रहे।

एमडीएच के डायरेक्टर महाशय राजीव गुलाटी जी की ओर से इंटरनेशनल कुल्लू दशहरा कार्यक्रम के लिए हिमाचल के चीफ पार्लियामेंट सेक्रेटरी सुन्दर सिंह ठाकुर जी एवं कुल्लू के डी सी आशुतोष गर्ग जी को ११ लाख के सहयोग का चेक प्रदान किया गया।

एमडीएच के डायरेक्टर महाशय राजीव गुलाटी जी द्वारा नोएडा

गुरुकुल के कार्यक्रम में ₹१५१००० का सहयोग भेजा गया है। इस राशि का चैक आदरणीय भाई जितेन्द्र जी भाटिया द्वारा गुरुकुल के अधिकारियों को सौंपा गया।

इस अवसर पर आदरणीय अशोक चौहान भी उपस्थित थे। उनके साथ आनन्द चौहान जी एवं अमेठी की चेयर पर्सन माता अमिता चौहान जी उनके दो पुत्र एवं पुत्रवधू जी भी साथ में आए थे।

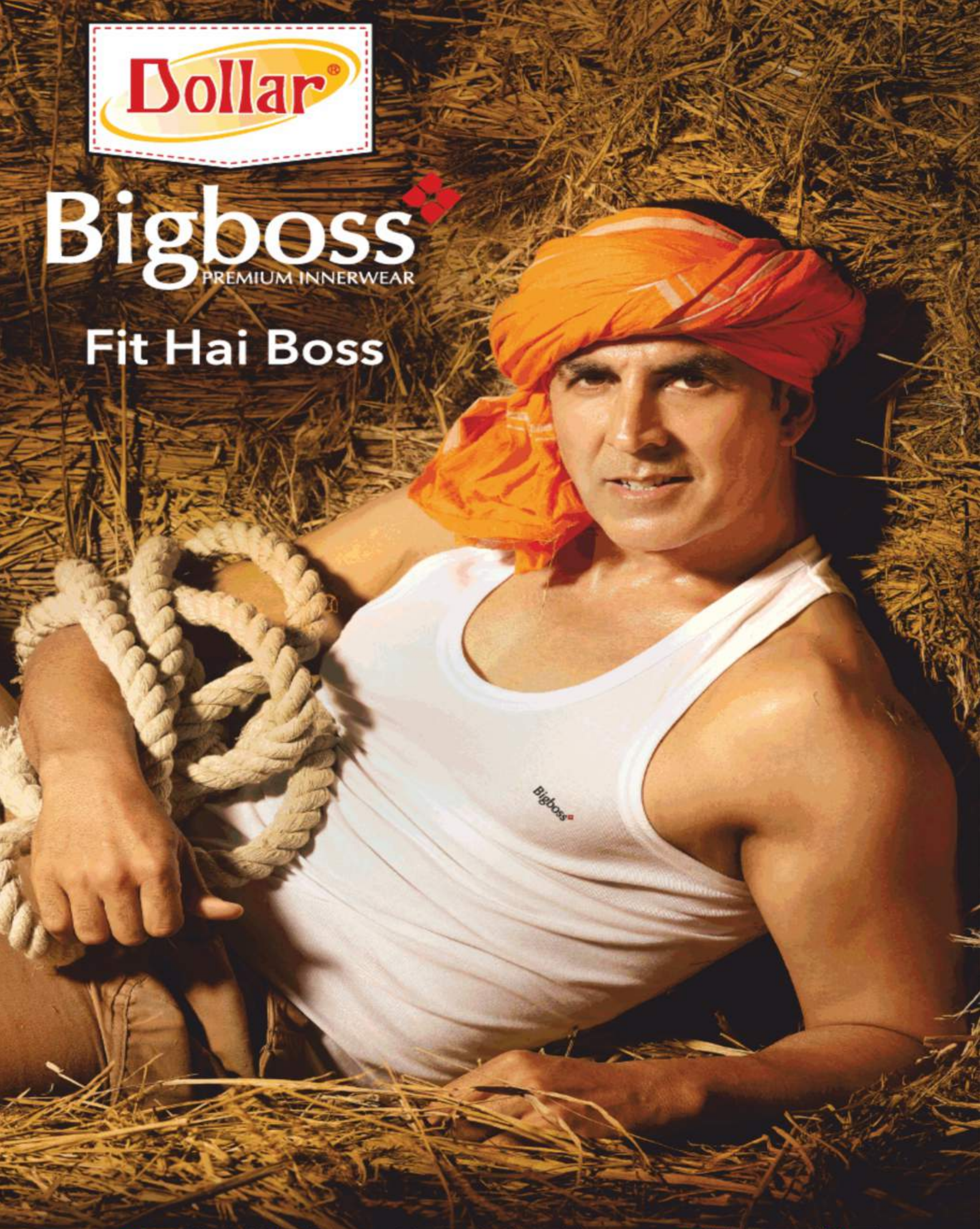

| www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at flipkart snapdeal amazon.in Myntra
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 January-2024 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

जो-जो विद्या और धर्म प्राप्ति के कर्म हैं, वे प्रथम करने में विष के तुल्य और पश्चात् अमृत के सदृश होते हैं।

सत्यार्थ प्रकाश; भूमिका पृष्ठ ५

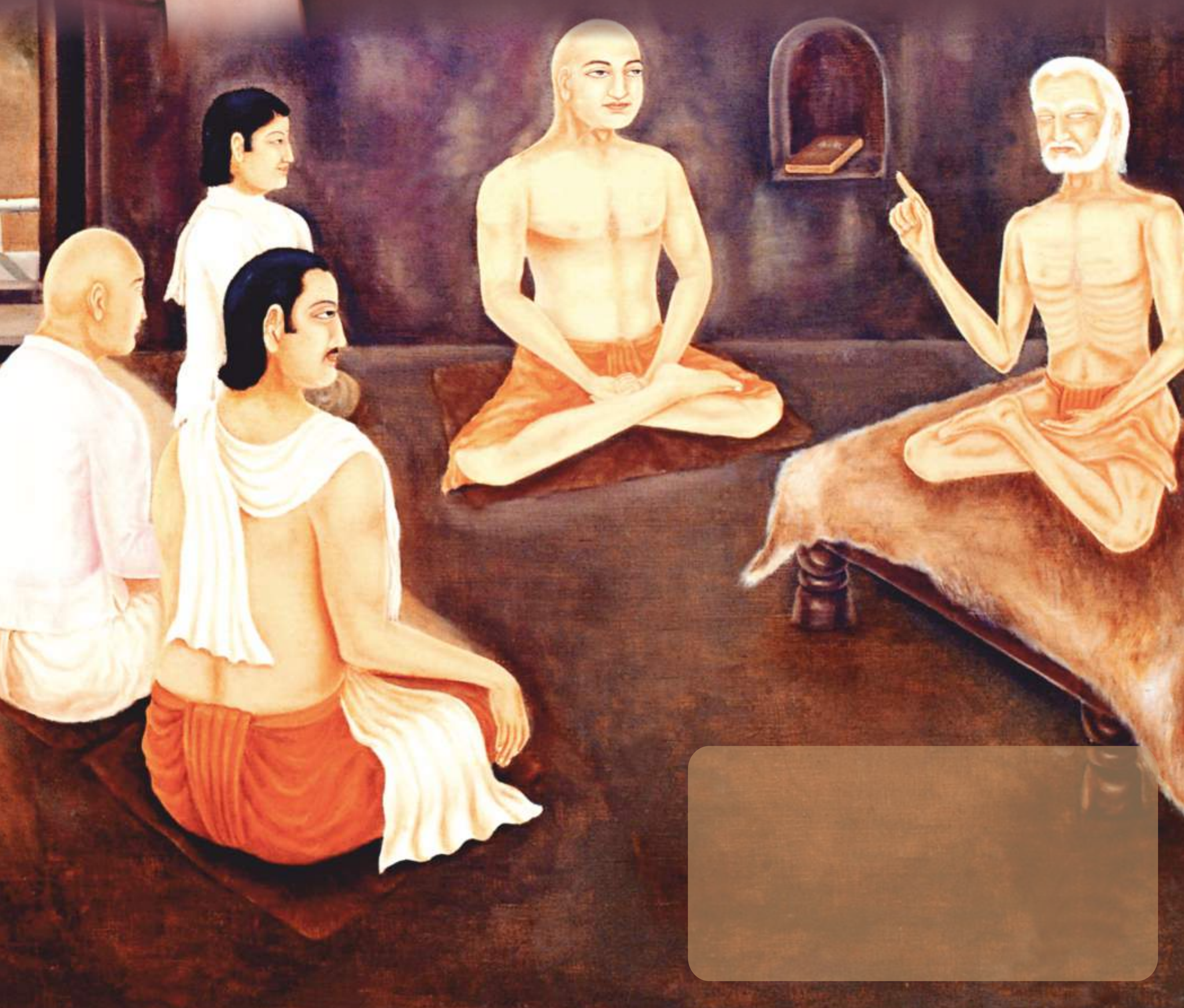

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर